www.achyutasamanta.com

/AchyutaSamanta
/Achyuta_Samanta
/dr.achyutasamanta
/OfficeOfAchyutaSamanta
/MPKandhamal

www.kiit.ac.in
/KIITuniversity
/KIITuniversity
/KIITuniversity

www.kiss.ac.in
/kissfoundation
/kissfoundation
/kissfoundation

www.artofgiving.in.net
/artofgiving.in.net
/artofgiving_net

अच्युत सामंत

लोक सभा सदस्य,
कंधमाल लोक सभा
एवं संस्थापक, के.आई.आई.टी
तथा के.आई.एस.एस.

प्रोफेसर अच्युत सामंत

रूपरेखा एक दृष्टि में

- जन्म वर्ष 1965। उत्कल विश्वविद्यालय से सन् 1987 में रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करके सामाजिक विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की और 22 वर्ष की आयु में अध्यापन कार्य आरम्भ किया। 33 वर्ष का शिक्षण अनुभव।
- के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति और किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय के सबसे कम उम्र के कुलपति।
- के.आई.आई.एस. विश्वविद्यालय (विश्व का पहला जनजातीय विश्वविद्यालय) के संस्थापक कुलपति और विश्व के किसी जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति होने वाले प्रथम व्यक्ति।
- वर्ष 2018–19 में राज्य सभा के सांसद निर्वाचित। वर्तमान में बीजू जनता दल से लोकसभा संसद सदस्य।
- भारत के तीन सर्वोच्च शैक्षिक निकायों में सेवा की शर्तों के साथ सदस्य के रूप में सेवा की –– (1) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) के दो लगातार कार्यकालों (2008–11 और 2011–2014) तक, (2) तकनीकी शिक्षा के लिए अखिल भारतीय परिषद की कार्यकारी समिति (ए.आई.सी.टी.ई.) में और (3) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) में।
- इसके अतिरिक्त भारत के कई अन्य सरकारी निकायों, जैसे एन.सी.टी.ई., आई.एस..टी.ई., आई.एस.सी.ए., क्वायर बोर्ड, कैपर्ट (ह।ऋ।त्ज), इत्यादि असम और ओडिशा के केंद्रीय विश्वविद्यालय के अकादमिक परिषद में सदस्य के रूप में सेवा की।
- मणिपुर के राज्यपाल द्वारा मणिपुर सरकार के शिक्षा विभाग में पूर्व–प्रधान सलाहकार के रूप में मनोनीत हुए।
- वर्ष 2017–18 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन (आई.एस.सी.ए.) के प्रधान अध्यक्ष एवं वर्ष 2018–19 में 39वें विश्व कांग्रेस के कवियों के अध्यक्ष के रूप में सेवा की। वर्तमान में वह वॉलीबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष तथा सीमारहित लोकतंत्र के अध्यक्ष (भारत) के रूप में मनोनीत हुए। उन्होंने जनजातीय आदिवासी लोगों के लिए सांसदों की भी स्थापना की है।
- भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री राम नाथ कोविंद द्वारा बच्चों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार 2016 से सम्मानित हुए।
- फिक्की हायर एजुकेशन अवार्ड्स द्वारा पर्सनालिटी ऑफ दी ईयर 2019 अवार्ड से सम्मानित।
- इंडियन फेडरेशन ऑफ ग्रीन एनर्जी द्वारा ग्रीन एक्टिविस्ट अवार्ड से सम्मानित।
- विश्व भर में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से 44 बार ऑनोरिस कोसा डॉक्टरेट पुरस्कार से सम्मानित।
- आई.एस.टी.ई., सी.एस.आई., आई.सी.ए. एवं ए.पी.ए.सी.एच. से 4 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फैलोशिप प्राप्त।
- यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त वर्ल्ड एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड कल्चर (डब्ल्यू.ए.ए.सी.) द्वारा गोल्डन गैवेल से सम्मानित।
- गुसी पीस प्राइज इंटरनेशनल, मनीला (एशिया का शांति पुरस्कार) के साथ अलंकृत।
- मानवतावादी सेवा के लिए आई.एस.ए. पुरस्कार से सम्मानित। बहरीन की सल्तनत द्वारा एक मिलियन डॉलर नकद पुरस्कार के साथ सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार प्रदान किया गया।
- 50 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं 200 से अधिक राजकीय सम्मान और प्रशंसा के अतिरिक्त मंगोलिया और बहरीन के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित।
- भारत के नम्बर 1 डीम्ड विश्वविद्यालय, के.आई.आई.टी. एवं कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (के.आई.एस.एस. डीम्ड विश्वविद्यालय), भुवनेश्वर के संस्थापक।
- मात्र 5000/– रुपये (100 अमेरिकी डॉलर) के साथ प्रो. सामंत ने दो कमरे के किराए के मकान में के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. की शुरुआत की। भारत और विदेश के 30,000 छात्रों सहित वैश्विक प्रशंसा के साथ अब के.आई.आई.टी. विकसित होकर, सबसे होनहार विश्वविद्यालयों में से एक बन गया है।
- 60,000 जनजातीय (आदिवासी) बच्चों (30,000 के.आई.एस.एस.–भुवनेश्वर में, 20,000 पूर्व छात्र एवं 10,000 छात्र ओडिशा के 10 जिलों में 10 उपग्रह केंद्रों में) को बालवाड़ी से लेकर स्नातकोत्तर तक की निःशुल्क शिक्षा एवं आवास उपलब्ध कराते हुए के.आई.एस.एस. विश्व का सबसे बड़ा आवासीय जनजातीय संस्थान बन गया है।
- शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, स्वास्थ्य, कला, संस्कृति, साहित्य, ग्रामीण विकास, सामाजिक सेवा और आध्यात्मवाद के क्षेत्र में अपार योगदान है।
- कटक जिले के दूरदराज गाँव 'कलारबंका' को एक स्मार्ट गाँव और पूरे मानपुर पंचायत को एक आदर्श/मॉडल पंचायत (गांवों का समूह) के रूप में रूपान्तरित किया गया।
- ओडिशा के विभिन्न जिलों में के.आई.एस.एस. की 20 शाखाओं एवं देश भर में एक और 20 शाखाओं की स्थापना का कार्य जारी है। उन्होंने समाज के वंचित वर्गों के लिए वर्ष 2013 में के.आई.एस.एस.–दिल्ली की स्थापना की एवं बांग्लादेश में के.आई.एस.एस. की दो शाखाओं की स्थापना की हैं।
- प्रत्यक्ष रूप से लगभग 15,000 लोगों को रोजगार मुहैया कराया और पूरे देश में अप्रत्यक्ष रूप से 100 सफल उद्यम सृतन करके दो सौ हजार से अधिक रोजगार प्रदान किये।
- सन् 1987 से जीरो पॉवर्टी (कोई निर्धन न रहे), जीरो हंगर (कोई भूखा न रहे) और जीरो अशिक्षा (कोई अशिक्षित न रहे) को प्राप्त करने के लिए प्रो. सामंत अनथक प्रयास कर रहे हैं।

अगले कुछ पृष्ठों को क्यों पढ़ना चाहिए?

इसे अवश्य पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है, जो अभाव और गरीबी में जन्म लेकर सभ्ंघर्ष करते हुए एक आत्मनिर्भर बनता है और अपना जीवन जन–समुदायं, समाज और राष्ट्र को समर्पित करने के लिए एक स्व–निर्मित व्यक्ति बन जाता है। उन्होंने कभी अपने बारे में नहीं सोचा, अपने सुख–ऐश्वर्य या अपने परिवार के लिए कुछ नहीं किया। उन्होंने सदैव समाज के हित को स्वयं से ऊपर रखा। बड़े होकर उन्होंने भूख से नहीं अपितु दुनिया भर के लाखों गरीबों की भूख मिटाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उनका संघर्ष अभी भी जारी है।

प्रो.अच्युत सामंत एक दिन भी आराम किए बिना अपने मिशन के साथ प्रयास करते रहते है, हालाँकि, उन्हें बिल्कुल बुरा नहीं लगता। वर्ष 1987 से आज तक, लगातार 31 वर्षों के अपने यौवन–काल में स्वयं के लिए उन्होंने 31 घंटे भी नहीं बिताए हैं। पता नहीं कहां से वह अवतरित हुए हैं, जिन्होंने महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, डॉ. अंबेडकर, रवींद्र नाथ टैगोर के सपनों और आकांक्षाओं को पत्र और भावना से पूरा किया है। पिछले 26 वर्षों से वह उत्कृष्ट शिक्षा के माध्यम से गरीबी और भूख को कम करने के लिए काम कर रहे हैं, जो संयुक्त राष्ट्र सतत विकास के लक्ष्यों में से एक सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है। शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, अनुसंधान और विकास, जनजातीय सशक्तीकरण, महिला अधिकार, कला, संस्कृति, साहित्य, मीडिया और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उनका योगदान अद्वितीय है। लोग उन्हें उनकी उपलब्धियों और संस्थानों के लिए नहीं, बल्कि उनकी सादगी, ईमानदारी, पारदर्शिता, समर्पण और जुनून के लिए प्यार करते हैं। सभी उपलब्धियों एवं पूर्णता के बाद भी वह अभी भी एक मामूली एवं विनम्र जीवन शैली का नेतृत्व करते हैं और अपने एवं लोगों के प्रति ईमानदारी, निष्ठा और अखंडता को बनाए

लीफ–पिकर (पत्ती बीनने वाले) से लेकर नीति–निर्माता तक

और करुणा से भरपूर पोषण के विपरीत, अच्युत सामंता का बचपन सबसे कठिन, दुःखद और संघर्ष से भरा हुआ था।

कोई कभी सोच भी नहीं सकता था कि एक गरीब बालक, जो भोजन, शिक्षा और अस्तित्व के लिए संघर्ष करता रहा, वह एक दिन ऐसे महान और शक्तिशाली कार्यों को पूरा करेगा और एक आत्मनिर्भर व्यक्ति बन सकेगा। वही व्यक्ति जिसने संघर्ष भरा दुखदायी जीवन जीया है, आज वह अनूठी पहल के लिए गहन सराहना प्राप्त कर रहा है। यदि कोई अपने जीवन के 50 वर्षों में संघर्षों की विशाल यात्रा पर विचार करता है तो प्रो. अच्युत सामंत की जीवन कहानी अनुपम एवं अद्वितीय है। समकालीन समय में प्रोफेसर सामंत सबसे महान शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सामाजिक सक्रिय प्रतिभागियों, मानवतावादियों और परोपकारी लोगों में से एक हैं, जिन्होंने इस दुनिया को गरीबी, भूख, अशिक्षा, सामाजिक अलगाव और इस दुनिया से मुक्त करने के लिए अपने समर्पण, बलिदान और असाधारण दृष्टि के साथ अभिमन्त्रित किया है और मानव पूँजी के विकास की अतिआवश्यकता को सुनिश्चित करने का प्रयास किया है।

प्रो. अच्युत सामंत के माता–पिता का नाम स्वर्गीय नीलिमा रानी सामंत और स्वर्गीय श्री अनादि चरण सामंत था। लेकिन, अधिकांश बच्चों को अपने माता–पिता की गोद में अंतहीन देखभाल, आराम

वह चार वर्ष के थे, जब उनके पिता की एक दुखद रेल दुर्घटना में मृत्यु हो गई। वह यह समझने में असफल रहे कि जब उनके परिवार में एकमात्र आजीविका चलाने वाले का शोक था। इस तरह की सुकुमार उम्र में, दुर्भाग्य के आघात के कारण, वह गरीबी के दर्द को समझना आरम्भ कर दिये, जिसका कि परिवार को सामना करना पड़ा। उनके पिता, एक छोटे कर्मचारी थे, जो कमाए गए सीमित पैसे से थक चुके थे और अपने सात बच्चों सहित पत्नी का भरण–पोषण करने के लिए भारी मात्रा में ऋण ले लिये थे। पिता की असामयिक मृत्यु के बाद परिवार को कर्ज के बोझ और गरीबी से गुजरना पड़ा और अपमान का सामना करना पड़ा। वे एक समय के भोजन तक के लिए मुहताज थे और उसके लिए संघर्ष करते रहे जबकि माँ के पास नहाने के बाद बदलने के लिए दूसरी जोड़ी साड़ी तक नहीं थी।

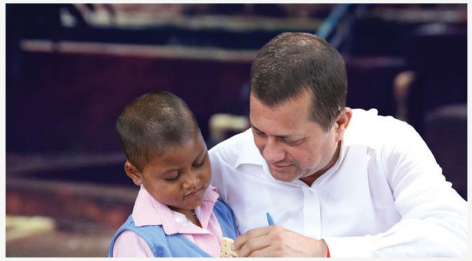

अपने पिता की मृत्यु के बाद, वे ओडिशा के कटक के पास एक दूरदराज के गांव कलारबंका में स्थानांतरित हो गए। उनके पास मार्गदर्शन, सलाह और प्रेरणा देने के लिए ढाढ़स बढ़ाने वाला एवं सांत्वना देने वाला कोई नहीं था।

अपनी माँ के काम में हाथ बंटाने एवं पारिवारिक आय को बढ़ाने के लिए, जो दोनों छोरों को कभी पूरा नहीं करता था, इस तरह की लाचारी ने भी उन्हें कभी निराश नहीं किया। उन्होंने स्थानीय प्रधानाध्यापक की दया से अपनी प्राथमिक शिक्षा गाँव के स्कूल से प्राप्त की। उन्होंने अपने पूर्वस्नातक, स्नातक और डॉक्टरेट कार्यक्रम को समर्पण और विश्वास के साथ पूरा किया जो शिक्षा को सशक्त बनाता है और उनके स्वयं के जीवन के साथ–साथ दूसरों को भी बदलने की शक्ति रखता ह।

उन्होंने बमुश्किल अपना कैरियर एक अकादमिक के रूप में आरम्भ किया, परन्तु 1992 में जब उन्होंने यह महसूस किया कि ओडिशा के युवाओं के पास उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच की कमी थी और वे भारत के औपचारिक, प्रतिस्पर्धी नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक कौशल से वंचित थे, उन्होंने नौकरी छोड़ दी और दो मामूली संस्थान ''कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी और कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज'' की शुरूआत की। उन्होंने मात्र 100 अमेरिकी डॉलर (5000/– रुपये) के अल्प निवेश के साथ अपने भवन में जाने से पूर्व किराए के आवास में दोनों संस्थानों को संचालित किया। उन्होंने एक ऐसे क्षेत्र में उद्यम किया, जहां बड़े संगठन भी साहस नहीं करते थे।

दोनों संस्थान आज वैश्विक ख्याति और स्वीकार्यता के साथ विश्व–स्तर के संगठनों में विकसित हुए हैं।

ओडिशा का पहला युवा संस्थान, उनके अपने राज्य

में, जो अन्य भारतीय राज्यों की तुलना में पिछड़ गया था।

उन्हें विश्वास था कि उत्कृष्ट शिक्षा, आवश्यक परिवर्तन के साथ–साथ मानव पूंजी में विकास लाएगी।

के.आई.आई.टी., औद्योगिक व्यापार कौशल, अभियंत्रण, चिकित्सा, कानून, प्रबंधन, ग्रामीण प्रबंधन, वास्तुकला और बहुत कुछ प्रदान करने वाला, अग्रगामी, स्वयं रास्ता तलाश करने वाला शैक्षणिक केन्द्र बन गया।

वर्ष 1997 में अपनी स्थापना के बाद से के.आई.आई.टी. सदैव उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण कीर्तिमान स्थापित करता रहा है। वर्ष 1997 की स्थापना के उपरांत लेकिन 5 वर्ष के भीतर सन् 2002 में इसे 'ए' ग्रेड के साथ एन.ए.ए.सी. (यू.जी.सी.) और एन.बी.ए. (ए.आई.सी.टी.ई.) से मान्यता मिल गई। तब से के.आई.आई.टी. डीम्ड विश्वविद्यालय को हर 5 वर्ष में अपनी मान्यता के नवीकरण में उत्कृष्ट उन्नयन और टिप्पणियाँ मिल रही हैं। एन.बी.ए. (ए.आई.सी.टी.ई.) से वाशिंगटन अकॉर्ड अक्रेडटैशन प्राप्त करने के लिए सरकार और निजी छः संस्थानों/डीम्ड विश्वविद्यालयों के मध्य एक है। इसे ब्रिटेन (यू.के.) से आई.ई.टी. मान्यता मिली है जो विश्व की दूसरी सबसे बड़ी मान्यता है और देश का मात्र दूसरा डीम्ड विश्वविद्यालय है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा के.आई.आई.टी. को 'इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस' टैग ('प्रख्यात संस्था' नाम–पत्र) के साथ जोड़ा गया है।

भारत सरकार द्वारा इसे 'इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस' के रूप में मान्यता दी गई है। के.आई.आई.टी. को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के 2020 के अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीट्यूशन ऑन इनोवेशन एचीवमेन्ट्स (ए.आर.आई.आई.ए.) पर देश के स्व–वित्तपोषण संस्थानों में नम्बर 1 स्थान दिया गया है। दी टाइम्स हॉयर एजूकेशन वर्ल्ड यूनीवर्सिटी रैंकिंग्स 2021 द्वारा के.आई.आई.टी. के कंप्यूटर विज्ञान संकाय को 501–600 के बैंड में स्थान दिया गया है। यह भी उल्लेख करना उचित होगा कि के.आई.आई.टी. को अपनी इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी धाराओं के लिए 601–800 बैंड में स्थान दिया गया है। के.आई.आई.टी. ने 'वर्कप्लेस ऑफ दी ईयर' के लिए दी टाइम्स हायर एजुकेशन (टी.एच.ई.) अवार्ड्स एशिया 2020 भी जीता है।

छात्रों, अभिभावकों और जन–समुदाय के बीच इस विश्वविद्यालय की विश्वसनीयता और लोकप्रियता बहुत अधिक है। किसी भी विश्वविद्यालय के लिए इसकी विशाल आधारिक संरचना अद्वितीय है। इसके अतिरिक्त के.आई.आई.टी. ने भारत में किसी भी सरकारी और निजी विश्वविद्यालय के बीच में उपलब्ध विशाल खेल अवसंरचना का निर्माण किया है।

इसने ओलंपियन का निर्माण किया है और पिछली सिविल सेवा परीक्षा में 9वें स्थान सहित सिविल सेवा में योग्य छात्रों की संख्या भी है। यह देश का एकमात्र डीम्ड विश्वविद्यालय है, जहाँ इसकी स्थापना के बाद से ही कुलपति पद पर प्रसिद्ध

KIIT & KISS Bhubaneswar

शिक्षाविदों, जैसे यू.जी.सी. के चेयरमैन और जाने–माने कानूनी दिग्गजों ने कब्जा कर रखा है। यह देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है, जहां पर गत 10 वर्षों में 22 से अधिक नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने दौरा किया है। सभी नीति–निर्माताओ और शिक्षाविदों के अतिरिक्त माननीय राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री सहित, अन्य देशों के समस्त गणमान्य व्यक्तियों ने यहां का परिभ्रमण किया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने ए.आई.सी.टी.ई., नई दिल्ली के तहत नवाचार परिषद (इनोवेशन काउंसिल) की स्थापना के लिए के.आई.आई.टी. को सम्मानित किया है। के.आई.आई.टी. स्कूल ऑफ लॉ को भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा वर्ष 2018 में भारत के सर्वश्रेष्ठ इनोवेटिव लॉ स्कूल से सम्मानित किया गया है। बी–स्कूल रैंकिंग में नेशनल इंस्टीच्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एन.आई.आर.एफ.), एम.एच.आर.डी., भारत सरकार, 2018 के अनुसार के.आई.आई.टी. स्कूल ऑफ मैनेजमेंट 22वें स्थान पर रहा। 60 देशों से 600 से अधिक छात्र अपनी व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और के.आई.आई.टी. ने 180 से अधिक विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। सामाजिक कारण के लिए इसका आउटरीच (हद से परे जाने का) कार्य पूरे विश्व में किसी के पास नहीं है।

जैसे–जैसे के.आई.आई.टी. आगे बढ़ता गया, उसका सहयोगी संगठन, कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोसल साइन्सेज (के.आई.एस.एस.) भी समान गति से आगे बढ़ता गया। समावेशी शिक्षा के साधन द्वारा आदिवासी अलगाववाद, गरीबी और अशिक्षा को व्युत्क्रम करने के लिए प्रो. अच्युत सामंत द्वारा तैयार किया गया '3 ई' फार्मूला ''शिक्षित, सशक्तीकरण और सक्षम'' बनाना, एक उत्कृष्ट कदम है। इसे विश्व का सबसे बड़ा मध्यवर्तन माना जाता है, जिसमें ओडिशा और पड़ोसी राज्यों के वंचित आदिवासी जनजातीय समुदायों के 60,000 बच्चों को बालवाड़ी से लेकर स्नातकोत्तर तक की समग्र शिक्षा के साथ–साथ बोर्डिंग सुविधाओं, कपड़े, स्वास्थ्य सेवा, व्यावसायिक और जीवन कौशल सहित निःशुल्क सशक्त बनाया जा रहा है। के.आई.एस.एस. के पास सशक्त और सुदृढ़ 20,000 पूर्व छात्र हैं, जो स्वयं अपने, अपने परिवारों और समुदायों के लिए अच्छी तरह से रखने एवं उनमें परिवर्तनकारी मुहिम के लिए तत्पर रहते हैं। 10,000 आदिवासी लड़के एवं लड़कियां ओडिशा के 10 जिलों में के.आई.एस.एस. के उपग्रह केन्द्रों में अध्ययन करते हैं। एक सपने के रूप में मामूली साधन एवं जुनून के साथ आरम्भ हुआ यह सफर अब जनजातीय लोगों के जीवन में एक क्रांति के रूप में उभरा है।

के.आई.एस.एस. में वर्ष 1992–93 में मात्र 150 छात्रों की तुलना में वर्ष 2018 तक, एक छात्र–शक्ति के साथ यह संख्या बढ़कर 50,000 से अधिक पहुँच गयी है, जिनमें ओडिशा के आदिवासी छात्रों सहित भारत के अन्य राज्यों एवं विदेशों के भी कुछ जनजातीय छात्र हैं। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2017 में कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज को डीम्ड–टू–बी–यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया गया था। इसके साथ ही यह जनजातीय आदिवासी छात्रों के लिए विश्व का पहला विश्वविद्यालय बन गया है।

प्रो. सामंत ने अकेले दम पर दूरदराज एवं हाशिये पर रहने वाले लाखों लोगों के जीवन को एक नई दिशा एवं डोर सौंपने के लिए एक क्राँतिकारी शुरुआत की। वह जिस पैमाने पर अपने कार्यक्षेत्र में काम करते हैं और जिस गति पर उनकी संस्थाएँ शाँति का निर्माण करती हैं और बढ़ावा देती हैं, सभी कुशल राजनेताओं, राजनयिकों, राज्य प्रमुखों, देश के प्रमुखों, कानूनी दिग्गजों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, समाजशास्त्रियों, मीडिया हस्तियों, कारपोरेट्स, नोबल पुरस्कार विजेताओं, मैगसेसे पुरस्कार विजेताओं, और भारत और विदेशों से आने वाले कई अन्य गणमान्य हस्तियों द्वारा इसकी सराहना, सत्कार और भूरि–भूरि प्रशंसा की गयी है, जिन्होंने के.आई.एस.एस. का दौरा किया है और इसके बारे में जानते हैं। लेकिन इसे आरम्भ करना कभी इतना आसान नहीं था। उन्होंने इसके बारे में तब सोचा था, जब एक परिवर्तनात्मक अभिनव मॉडल के रूप में जनजातीय/आदिवासी शिक्षा के बारे में पर्याप्त जागरूकता नहीं थी। यह एक ऐसा नीरस क्षेत्र था जहां हर स्टेकहोल्डर या हितग्राही विफल हो गया था या पहला कदम उठाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

ओडिशा, भारत के सबसे गरीब राज्यों में से एक है, जिसमें लगभग 25 प्रतिशत आदिवासी आबादी है, जो सदियों से प्रकृति के करीब अत्यधिक गरीबी, दुख, अज्ञानता और अंधविश्वास में रहती है। वे विकास की पहुँच से बिल्कुल अलग जंगलों में जन्म, जीवन और क्षय के एक चक्र को जीते हैं। ऐसे परिदृश्य में जो आज भी मौजूद है, एक व्यक्ति ने 25 वर्ष की उम्र की युवावस्था में अपनी दृष्टि, मिशन और जुनून के साथ अलिखित एवं दुर्गम मार्ग में प्रवेश करने का साहस किया और शिक्षा के माध्यम से पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को सशक्त बनाकर अलग–थलग पड़ी आबादी को मुख्यधारा में लाने का साहस एवं प्रयास किया। यह वह समय था जब न तो सरकार और न ही किसी नीतिनिर्माता ने कोई अभिनव मॉडल तैयार किया था।

प्रो. सामंत ने ऐसे कदम उठाने का साहस किया, जिसके बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि वह नक्सलवाद (वामपंथी अतिवाद) को समाप्त करते हुए हिंसा और छलावे के चंगुल से उन्हें बाहर निकालने में सक्षम हो सकेंगे।

शिक्षा के कारण उन संवर्गों ने तलवारों के बजाय कलम धारण किया और अपने जीवन और पीढ़ियों में बदलाव की सराहना की। के.आई.एस.एस. ने सफलतापूर्वक मिलेनियम विकास लक्ष्यों (एम.डी.जी.) को सम्बोधित किया और 2030 के लिए वैश्विक विकास के सतत विकास लक्ष्यों के लिए योगदान दे रहा है जैसा कि वर्ष 2015 के संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव में परिकल्पित किया गया था। वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा के.आई.एस.एस. को विशेष सलाहकार का दर्जा दिया गया। के..आई.एस.एस. के शैक्षणिक और आदिवासी विकास मिशन के माध्यम से इन परिवारों से जुड़े 1,50,000 लोगों में से लगभग 30,000 परिवार एवं उनके पड़ोस में एक मिलियन अतिरिक्त आदिवासी लाभान्वित हुए हैं और परिवर्तनकारी विकास का अनुभव कर रहे हैं। दूरदराज के आदिवासी इलाकों में बढ़ते आदिवासी विद्रोह के प्रसार को प्रतिबन्धित और पिछड़ेपन को दूर करने के लिए के.आई.एस.एस. मॉडल सफलतापूर्वक सम्बोधित किया गया। पहले से कहीं ज्यादा तेज गति से जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा और साक्षरता फैल रहा है। के.आई.एस.एस. से शून्य छात्र के विद्यालय छोडकर जाने वालों की विरासत, जनजातीय क्षेत्रों में सरकार द्वारा संचालित स्कूलों पर पकड़ बना रहा है, क्योंकि अधिक से अधिक आदिवासी बच्चे अपने घरों से बाहर आ रहे हैं ताकि वे आदिवासी इलाकों में विभिन्न सरकारी स्कूलों और सामान्य स्कूलों में दाखिला ले सकें और पढ़ाई जारी रख सकें। आदिवासी पुनर्जागरण के लिए के.आई.एस.एस. एक प्रकाशस्तम्भ के प्रतीक के रूप में खड़ा है।

उनका मानना है कि वास्तविक विकास जमीनी स्तर पर होना चाहिए और शहर तभी स्मार्ट हो सकते हैं जब गाँव स्मार्ट हों। उन्होंने अपने गाँव को एक आदर्श गाँव में बदलने का काम किया।

उन्होंने एक शाब्दिक स्कूल से शुरुआत की, जिसके बाद

बैंकों, ए.टी.एम., पुलिस स्टेशन, डाकघरों, सप्ताह के सातों दिन और चौबीसों घंटे 100 बेड वाले डिस्पेंसरी की चिकित्सा सुविधा, वृक्षारोपण केन्द्र, महिला क्लब, युवा क्लब, कम्यूनिटी हॉल, सी.सी.टी.वी. सहित कैंटीन, सार्वजनिक पुस्तकालय, मन्दिर और सगाई के अन्य स्थान के साथ एक अंग्रेजी माध्यम का स्कूल था, जो 300 पुरुषों को रोजगार देते थे। इस मॉडल गाँव का उद्घाटन वर्ष 2006 में ओडिशा के तत्कालीन राज्यपाल द्वारा किया गया था और उनके अनुरोध पर पूरे पंचायत को एक उचित मॉडल पंचायत में बदल दिया गया था, जिससे पूरे गांव को वाई–फाई और सौर ऊर्जा को सक्षम बनाया गया था। वर्ष 2016 में, ओडिशा के तत्कालीन राज्यपाल ने सुविधाओं में वृद्धि के साथ स्मार्ट विलेज काउद्घाटन किया।

जब खेल और संस्कृति की बात आती है तो एक अद्वितीय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा और खेल सुविधा प्रदान करने में के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. केवल दो संस्थानों का नाम आता है। इसने 5000 से अधिक खिलाड़ियों का उत्पादन किया है और उनमें से कुछ ने ओलम्पिक, कॉमनवेल्थ गेम्स, एशियन गेम्स, साउथ एशियन फेडरेशन आदि में भाग लिया है और जीत भी हासिल की है। वर्ष 1992–1993 में स्थापना के समय से ही एक बदलाव लाने वाले और सशक्तीकरण के एक उपकरण के रूप में के.आई.एस.एस. और के.आई.आई.टी. को खेल–कूद की क्षमता का एहसास हो गया है। इसे समझते हुए के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. ने विभिन्न संगठित खेलों में आदिवासी बच्चों के कौशल में सुधार लाने एवं उसे प्रखर करने के लिए व्यवस्था की है। अत्याधुनिक बुनियादी सुविधाओं एवं अद्भुत प्रशिक्षणकर्मियों के साथ आदिवासी खिलाड़ियों के लिए खेलों पर जोर देते हुए के आई.एस.एस. को खेल का एक केन्द्र बना दिया है। उन्हें रग्बी, फुटबॉल, हॉकी, तीरंदाजी, निशानेबाजी, वॉलीबॉल, आदि के लिए सक्षम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कोचों के अधीन आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं में प्रशिक्षित किया जाता है। नियमित रूप से वे विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर जीतते हुए पुरस्कृत होते हैं। के.आई.एस.एस. के योगदान के साथ रग्बी भारत में प्रसिद्ध हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर के खेलों में, के.आई.एस.एस. में अध्ययनरत आदिवासी छात्रों की उत्कृष्ट उपलब्धियाँ, आदिवासी सशक्तीकरण के के.आई.एस.एस. मॉडल की प्रभावशीलता को पूरी तरह से साबित करती है। ओडिशा के दूरदूराज के क्षेत्रों से खिलाड़ियों को लाकर, शतरंज, रग्बी, तीरंदाजी, वॉलीबॉल, क्रिकेट के कई मेगा इवेन्ट्स के लिए के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. ने मेजबानी की है। के.आई.एस.एस., स्पोर्ट्स मे खिलाड़ियों की विरासत का निर्माण कर रहा है।

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न, प्रो सामंत के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. की उपलब्धियों मात्र से संतुष्ट नहीं हुए, अपितु वह माँ, मातृभूमि और मातृभाषा का सम्मान करने के लिए अपने मार्गों और अपने जीवन–दर्शन को कभी नही भूले। वह ओडिशा के साहित्य, कला और संस्कृति की लगातार संरक्षा, समर्थन और उन्नति कर रहे हैं। भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के प्रति उनके जुनून और प्यार ने वर्ष 2000 में कादम्बिनी मीडिया प्राइवेट लिमिटेड को जन्म दिया, जो पहली बार ओडिया भाषा में पारिवारिक फीचर पत्रिका के रूप में 'कादम्बिनी' और बच्चों के लिए 'कुनिकाथा' पत्रिकाएँ प्रकाशित कर रहा है। प्रो. सामंता की सुसंस्कृत अभिरुचि और कुशलता की निर्मल भावना और मर्मस्पर्शी विशिष्टता को दर्शाती है, जिसने पत्रिकाओं को आज ओडिशा में घरेलू नाम दिया है। कलिंगा इंस्टीच्यूट ऑफ फैशन एण्ड फिल्म्स के तत्वाधान में कादम्बिनी मीडिया प्राइवेट लिमिटेड ने 'कथान्तरा' और 'क्रांतिधारा' ओडिया में पुरस्कार विजेता फीचर फिल्मों का निर्माण किया। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, उनके व्यक्तित्व का एक उल्लेखनीय पहलू है, जो मानव समाज की सेवा के लिए उनके हृदय की पुकार के प्रति उनकी सहज प्रतिबद्धता

के कारण है। उन्होंने पूरे भारत में युवा लड़कियों के लिए एक टैलेन्ट हंट शो 'नन्ही परी लिटिल मिस इण्डिया प्रतियोगिता' का भी संरक्षण किया है।

दो परिसरों के आसपास के क्षेत्र मे एक साथ 400 एकड़ से ऊपर अधिक भूमि में फैले हुए के. आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस., दोनो संस्थानों ने बहुत आर्थिक समृद्धि प्राप्त की है। परिसर की परिधि में मानव बस्ती, व्यापार और कारोबार पिछले दो दशकों में बहुत शानदार तरीके से विकसित हुए हैं। पूरे क्षेत्र में 3,00,000 से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है, जबकि के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. में सीधे तौर पर 10,000 से अधिक लोग कार्यरत हैं। इस तरह का मानवीय सामाजिक विकास करने वाला एक शैक्षणिक बुनियादी ढाँचा विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं दिखाई देता।

वह आर्ट ऑफ गिविंग के प्रवर्तक और संस्थापक हैं, जो शांति और आनन्द फैलाने के लिए जीवन का एक दर्शन है तथा सभी के लिए शिक्षा, महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध हिंसा को रोकने के लिए एक प्रमुख पहल ''कन्या किरण'', ओडिशा के गांवों तक पहुंचने के लिए विभिन्न अभियान, वृक्षारोपण, स्वच्छता, स्वास्थ्य–रक्षा, जीवन–कौशल में संलग्न हैं। सभी के लिए शिक्षा पर उनका अभियान, उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लाभं के बारे में जागरूकता पैदा करने और कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे, यह सुनिश्चित करने के लिए एक पहल है।

प्रो. सामंत ने शैक्षिक न्यायसंगतता की लड़ाई के लिए अपने समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए वैश्विक मान्यता प्राप्त की है। शान्ति के एक योद्धा होने के नाते उन्हें वर्ष 2015 में गुसी शान्ति पुरस्कार के साथ प्रतिष्ठित किया गया, जिसे अन्यथा के रूप में एशिया के अपने नोबेल पुरस्कार के रूप में भी जाना जाता है। यह पुरस्कार पाने वाले वे एकमात्र भारतीय थे। उनके मानवीय कार्य को बहरीन साम्राज्य द्वारा भी सराहा गया है, जिसने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया है। उन्हें मंगोलिया के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त उन्हें 50 से अधिक प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय और 200 से अधिक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सुशोभित किया गया। शिक्षा और शैक्षिक उद्यमिता के क्षेत्र में उनके योगदान को भारत और विदेशों में 100 से अधिक विश्वविद्यालयों, सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा मान्यता दी गई है। उन्हें 40 से अधिक सम्मानजनक मानद कौसा डॉक्टरेट और डॉक्टरेट ऑफ लेटर्स सम्मान से सम्मानित किया गया है।

अपनी शानदार सफलता और उपलब्धियों के बावजूद भी वह एक दो कमरे के किराए के घर में एक साधारण–सा समर्पित अविवाहित जीवन जीते हैं। अपने सामर्थ्य, विनम्रता, सादगी और पारदर्शिता के साथ वह धैर्य और जुनून के साथ मानवता की सेवा में समर्पित हैं। इस पर विश्वास करने के लिए उन्हें देखना होगा। लेकिन कई बार यदि कोई उन्हें देखता है तो भी उनकी सादगी और विनम्रता पर विश्वास नहीं कर पाता, क्योंकि यह वास्तव में अविश्वसनीय हैं।

वह वास्तव में ओडिशा के ऊपरी सदन में एक नए दायित्व के साथ संसद सदस्य के रूप में अपनी दीप्ति बिखेरते हुए मानवता की सेवा का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। वह आदिवासी और गरीबों के लिए उनकी आवाज बनना चाहते हैं और उनके जीवन में सशक्तीकरण लाते हैं। वास्तव में उनकी जीवनी एक पत्ता बीनने वाले से लेकर नीतिनिर्धारक तक उठने की गाथा है।

संगठनों के सदस्य

प्रेसिडेन्ट, वॉलीबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया।

मेम्बर, इण्डियन ओलम्पिक एसोसिएशन।

प्रेसिडेन्ट, 39वीं वर्ल्ड्स कांग्रेस ऑफ पोयट्स, डब्ल्यू.ए.ए.सी.।

नेशनल कमीशन फॉर शिड्यूल्ड ट्राइब्स 2019 द्वारा एन.सी.एस.टी. लीडरशिप अवार्ड।

105वें इण्डियन साइन्स कांग्रेस के जनरल प्रेसिडेन्ट (2017–18)।

यूनियन ग्रांट कमीशन (यू.जी.सी.) 2008–2014 के आयोग सदस्य, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

एक्जीक्यूटिव कमेटी, ऑल इण्डिया काउंसिल फॉर टेकनिकल एजूकेशन (ए.आई.सी.टी.ई.), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और नेशनल काउंसिल ऑफ टीचर एजूकेशन।

ऐडवाइजर, शिक्षा मंत्रालय, मणिपुर सरकार।

ऐकडमिक काउंसिल ऑफ असम सेंट्रल यूनीवर्सिटी, सिलचर (प्रेसिडेंट ऑफ इण्डिया नॉमिनी)

ऐकडमिक काउंसिल, सेंट्रल यूनीवर्सिटी, ओडिशा (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के नॉमिनी)।

भारत सरकार के एम.एच.आर.डी. के शैक्षिक अवसरों के विस्तार के लिए वंचित वर्ग, महिलाओं और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए 'राउण्ड टेबल' पर कमेटी।

योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा गठित उच्च शिक्षा पर उच्च–स्तरीय समिति।

वन अधिकार अधिनियम पर कमेटी, पर्यावरण, वन एवं जनजातीय मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार।

सेंटर फॉर एडवांसमेंट ऑफ पीपुल्स एक्शन एंड रूरल टेक्नोलॉजी (सी.ए.पी.ए.आर.टी.), भारत सरकार।

नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (एन.सी.टी.ई.), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत।

कॉयर बोर्ड, भारत सरकार।

नेशनल एक्जीक्यूटिव काउंसिल, इण्डियन सोसायटी फॉर टेकनिकल एजूकेशन।

ई.सी. मेम्बर, इण्डियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन (आई.एस.सी.ए.) 2012।

राष्ट्रीय सचिव, गांधी ग्लोबल फैमिली (जी.जी.एफ.)।

इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटी प्रेसिडेंट्स (आई.ए.यू.पी.), यू.एस.ए.।

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (आई.आई.ई.), न्यूयॉर्क।

एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटीज ऑफ एशिया एण्ड दी पेसिफिक (ए.यू.ए.पी.)।

यूनिवर्सिटी मोबिल्टी इन एशिया एण्ड दी पेसिफिक (यू.एम.ए.पी.), बैंकॉक (थाईलैंड)।

एशिया–पेसिफिक ऐकेडमिक कंसोर्टियम फॉर पब्लिक हेल्थ (ए.पी.ए.सी.पी.एच.)।

यूनाइटेड नेशन्स ऐकेडमिक इम्पैक्ट (यू.एन.ए.आई.)।

एशिया इकनोमिक फोरम (ए.ई.एफ.)।

सी.आई.एफ.ई.जे. (सेंटर इंटरनैशनल दू फिल्म्स पोर लीनफांस एट लॉ ज्यूनेसी), दुबई।

एक्जीक्यूटिव कमेटी, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, ओडिशा स्टेट ब्रांच (गवर्नर्स नॉमिनी)।

वाईस प्रेसिडेंट, भारत स्काउट्स एंड गाइड्स, ओडिशा।

पुरस्कार

इंडियन फेडरेशन ऑफ ग्रीन एनर्जी द्वारा ग्रीन एक्टिविस्ट अवार्ड।

फिक्की हॉयर एजुकेशन अवार्ड्स द्वारा पर्सनालिटी ऑफ दी ईयर 2019।

यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त वर्ल्ड एकेडमी ऑफ आर्ट्स एण्ड कल्चर (डब्ल्यू.ए.ए.सी.) द्वारा गोल्डन गवेल

गांधी मंडेला शांति पुरस्कार 2019।

सामाजिक परिवर्तन श्रेणी में बिजनेसलाइन चेंजमेकर अवार्ड 2019।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा एन.सी.एस.टी. नेतृत्व पुरस्कार 2019।

वर्ल्ड एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड कल्चर (डब्ल्यू.ए.ए.सी.) की ओर से गोल्डन गैबेल 2018 पुरस्कार।

भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री राम नाथ कोविंद द्वारा 2017 में बच्चों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार।

इण्डियन इकनोमिक एसोसिएशन (2017) द्वारा कौटिल्य पुरस्कार।

जी.ओ.पी.आई.ओ. इंटरनेशनल अवार्ड 2017, मलेशिया।

सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए चेक गणराज्य के विदेश मंत्रालय का रजत पदक।

मानवता की सेवा के लिए बहरीन साम्राज्य द्वारा वर्ष 2015 का सबसे उच्च नागरिक पुरस्कार आई.एस.ए. (अवार्ड फॉर ह्यूमैनिटी)।

वर्ल्ड ऑफ डिफरेंस अवार्ड्स–2013 (दी इंटरनेशनल अलायंस फॉर विमेन, टी.आई.ए.डब्ल्यू., यू.एस.ए.)

गुसी शांति अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, मनीला (एशिया का शांति पुरस्कार) 2014।

किम्प्रो प्लेटिनम स्टैंडर्ड अवार्ड–2011।

उत्कृष्टता प्रमाण पत्र, 2010 (कंबोडिया सरकार)

एशिया का सर्वश्रेष्ठ सामाजिक उद्यमी, वर्ल्ड एच.आर.डी. कांग्रेस, सिंगापुर 2010।

एम.आई.टी. वर्ल्ड पीस यूनीवर्सिटी, पुणे द्वारा चौथे राष्ट्रीय शिक्षक सम्मेलन (नेशनल टीचर्स कांग्रेस) में जीवन गौरव पुरस्कार (आजीवन उपलब्धि पुरस्कार–लाइफटाइम एचीवमेन्ट अवार्ड) से सम्मानित।

मानवीय पुरस्कार–2004 (जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका)।

सामाजिक उद्यमी के रूप में मान्यता, स्कोल फाउंडेशन–2007 (15 सर्वश्रेष्ठ सामाजिक उद्यमियों में से एक)।

वर्ल्ड सी.एस.आर. कांग्रेस, 2015 द्वारा 'हॉल ऑफ फेम' पुरस्कार।

वर्ष 2015 में भारत के शीर्ष 50 सफल उद्यमियों में शामिल होने के लिए इकोनॉमिक टाइम्स अवार्ड।

एन.आई.क्यू.आर. बजाज आउटस्टैंडिंग क्वालिटी मैन अवार्ड 2016।

192 देशों में इसके अध्यायों के साथ विश्व में दूसरा सबसे बड़ा युवा संगठन, यूथिंक इंटरनेशनल द्वारा प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड।

डॉ. पिन्नमनेनी और श्रीमती सीता देवी फाउंडेशन अवार्ड–2014।

ऐशोचेम से वर्ष–2014 का शिक्षा उद्यमी पुरस्कार।

जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार–2012 (भारतीय विज्ञान कांग्रेस में)।

महावीर अवार्ड (भगवान महावीर फाउंडेशन)–2012।

गॉडफ्रे फिलिप्स ब्रेवरी पुरस्कार (सोसल ब्रेवरी) –2011।

आइकन ऑफ ओडिशा–2012 (टाइम्स ऑफ इंडिया) पुरस्कार।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर सम्मान–2011।

दैनिक भास्कर इंडिया प्राइड अवार्ड–2011 (सोशल डेवलपमेंट और इक्विटी होने के लिए चेंज एजेंट)।

अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, उत्कृष्टता प्रमाण पत्र 2010 (मस्कट, ओमान)।

स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुरस्कार–2010 (कर्नाटक सरकार)।

नेशनल यंग एज अवार्ड 2010।

गांधी सेवा पदक–2009 (परोपकार और दान)।

प्रिया ओडिया (मोस्ट एंडियर्ड पर्सनैलिटी ऑफ ओडिशा)–2007 (एक लोकप्रिय टी.वी. चैनल द्वारा एक सर्वेक्षण के माध्यम से)।

उनके शब्दों में उनका जीवन

''मैंने अपने जीवन के पहले 25 वर्षों तक भोजन के लिए संघर्ष किया और अब मेरा संघर्ष लाखों वंचित और अभावग्रस्त बच्चों को भोजन प्रदान करना है।''

''दर्द और जुनून मेरे सबसे अच्छे मित्र हैं, लाखों लोगों के लिए उत्कृष्ट शिक्षा के माध्यम से गरीबी दूर करने के लिए अतीत में दर्द और वर्तमान में जुनून है।''

उनके विचार

वंचित बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना, अंधे को दृष्टि देने जैसा है।

एक बालिका को शिक्षित करना, उसके बाद की पीढ़ियों को शिक्षित करने के बराबर है।

गरीबी अशिक्षा पैदा करती है। साक्षरता गरीबी को मिटाती है।

यदि किसी को उसके जीवनकाल के दौरान सराहना या सत्कार नहीं किया जाता है, तो वह जीवित, मृत के समान है।

सौन्दर्य के निर्माण से अधिक महत्वपूर्ण है, सौंदर्य की निरंतरता।

स्थायी सफलता का सबसे अच्छा तरीका सकारात्मकता है।

अवसर को देखते हुए, कमजोर भी उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

वर्तमान युग में आधी–अधूरी शिक्षा, बिना शिक्षा से भी अधिक हानिकारक है।

सोचो कि मैं क्या था, मैं क्या हूँ, मैं क्या रहूँगा!

' 'मैं निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करूँगा। समाज ने मुझे वही बनाया है, जो मैं हूँ। मैं आत्मसंतुष्ट हुए बिना ऋण वापस करूंगा।''

कृतज्ञ रहें, कृतघ्न नहीं।

के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. स्पोर्ट्स

दुर्लभ उपलब्धियां

न केवल उन्होंने के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. के लिए एक बड़े स्पोर्ट्स के बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, अपितु 5000 प्रतिभावान खिलाड़ियों का उत्पादन किया है (एक ही स्थान पर लड़कियों के बीच 70 प्रतिशत)।

100+

14 खेल विषयों में अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी (ओलंपिक, एशियाड, राष्ट्रमण्डल खेल, आदि में भागीदारी)

900

26 खेल विषयों में राष्ट्रीय खिलाड़ी

2000+

राज्य–स्तर के खिलाड़ी

2000+

राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और स्कूली खेलों में भाग लेने वाले खिलाड़ी

समाज सुधारक

देने की कला (आर्ट ऑफ गिविंग)
समाज में शाँति और प्रसन्नता को बढ़ावा देने के लिए जीवन का एक दर्शन।

नया मस्तिष्क – नया स्वप्न
ओडिशा के 30 जिलों में शिक्षा, स्वास्थ्य, मानव अधिकार, स्वच्छता और स्वास्थ्य–रक्षा के बारे में जागरूकता फैलाना।

कन्या किरण
ओडिशा में महिलाओं और बालिकाओं के विरुद्ध हिंसा को रोकने के लिए एक प्रमुख पहल।

सतत विकास
सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने की कार्रवाई में 5पी का एक खाका।

जीवन–कौशल शिक्षा
यू.एन.एफ.पी.ए. के सहयोग से 1,50,000 स्कूली बच्चों को आजीवन शिक्षा प्रदान करना।

प्रशंसा की कला
किसी के अच्छे गुणों या किसी चीज की सराहना, प्रसन्नता की कुंजी है।

कलिंगा फैलोशिप
महिलाओं के विरुद्ध यौन उत्पीड़न पर शून्य सहिष्णुता प्राप्त करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय फैलोशिप कार्यक्रम।

सभी के लिए शिक्षा
उत्कृष्ट शिक्षा के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने की एक पहल और यह सुनिश्चित करना कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

नकारात्मकता के विरुद्ध भारत
सकारात्मक मस्तिष्क वाले व्यक्तियों के लिए सकारात्मकता को बढ़ावा देने और नकारात्मकता का डटकर मुकाबला करने के लिए एक मंच।

जन्म वर्ष **1965**

30+
वर्षों का शिक्षण अनुभव।

2
बहरीन और मंगोलिया के नागरिक पुरस्कार।

100+
राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सराहना पुरस्कार।

44
विश्वविद्यालयों से मानद उपाधि।

1.5 lakhs
अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न रोजगार।

15,000+
सीधे उत्पन्न रोजगार।

100+
उद्यमी बनाए गए।

60,000
के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. में छात्र।

80,000
के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. के पूर्व छात्र।

22
नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. का दौरा किया।

75
राजदूतों ने के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. का दौरा किया।

200
राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वार्ता, भाषण, व्याख्यान दिए गए।

के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस., अपनी मानवता और दया के लिए मान्यता प्राप्त लॉकडाउन और महामारी के कारण कष्टों को कम करने के लिए सबसे अच्छे रूप से अपनी कोशिश कर रहा है। हमारे प्रमुख हस्तक्षेपों में से कुछ नीचे उल्लेखित हैं:

1 भोजन, राशन और आवश्यक आपूर्ति के साथ तीन लाख व्यथित लोगों तक पहुँचना।

2 ओडिशा में कोविड–19 के दौरान मृतक के बच्चों को निःशुल्क व्यावसायिक शिक्षा देने का आश्वासन।

3. राज्य में 1200 बेड वाले चार स्टैंडअलोन कोविड अस्पताल चल रहे हैं।

4. कोविड–19 के दौरान जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र, लिंग के बावजूद सैकड़ों अनाथों की देखभाल करना, उनकी संपूर्ण शिक्षा और परिवार के सदस्यों के लिए आजीविका के लिए धन देना।

5. अप्रैल 2020 के बाद से ओडिशा के ग्रामीण इलाकों में के.आई.एस.एस. में अध्ययन करने वाले 30,000 बच्चों को उनके दरवाजे पर सूखे खाद्य पदार्थों सहित पोशाक सामग्री, अध्ययन सामग्री का वितरण।

विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों में 200 से अधिक वार्ता, व्याख्यान और भाषणों को संबोधित किया गया।

- मैड्रिड, स्पेन (जुलाई–2015) में गरीबी उन्मूलन के लिए विश्वविद्यालय, कुलपति का एक संग्रह।
- गरीबी उन्मूलन के लिए शिक्षा की भूमिका के बारे में ओस्लोवेंसित विश्व के नेताओं का खुलासा। ओस्लो एजुकेशन सुमीत में आमंत्रित होने वाले भारत के एकमात्र शिक्षाविद् (जुलाई –2015)।
- ग्लोबल सी.ई.ओ. मीट, न्यूयॉर्क।
- सतत और समावेशी विकास'' पर चौथा ग्रिम्पर ओरेशन।
- विश्व बैंक समूह के 360 डिग्री विघटन ज्ञान मंच पर 'जमीनी स्तर पर भारत को सशक्त बनाने' पर एक भाषण दिया।
- मोतीलाल ओसवाल सिक्योरिटीज द्वारा आयोजित 12वें वार्षिक वैश्विक निवेशक सम्मेलन में एक मुख्य भाषण दिया।
- यू.एन.डी.पी., जयपुर।
- संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, नई दिल्ली।
- स्टार्स संगोष्ठी, चीन।
- आई.एफ.एस. अधिकारियों के लिए इंदिरा गांधी वन अकादमी, देहरादून।
- आई.ए.एस. अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी।
- हाउस ऑफ लॉर्ड्स, ब्रिटेन।
- यू.एन.एस.एस.सी. बॉन।

इनके अतिरिक्त उन्होंने कई दीक्षान्त समारोह और फाउन्डेशन व्याख्यान दिए।

मेरा बचपन

निर्धनता

जीर्ण–शीर्ण दो कमरों वाले घर के उस छोटे से स्थान में हम सभी शायद एक अप्रत्याशित भविष्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। आधी–अधूरी टूटी लालटेन से निकलती प्रकाश की टिमटिमाती किरण शायद हमारे जीवित रहने की आशा की एकमात्र किरण थी। हम सभी जानते थे कि प्रकाश तब तक नहीं रहेगा, जब तक कि रात में पर्याप्त मिट्टी का तेल (किरोसिन) न हो। किरोसीन भी हमारे लिए एक लक्जरी था और हमारे पास अंधेरे और प्रकाश के बीच चयन करने के लिए कोई विकल्प नहीं था।

वह रात शायद सबसे अंधेरी थी, क्योंकि इसने कमरे के अंदर भी हमारी हरकतों को प्रतिबंधित कर दिया था। हम पेड़ों को तेज हवा में गिरते हुए सुन सकते थे और यह केवल हमारे डर की भावना को जोड़ता था। हम बस इतना कर सकते है कि हमारे डर को भाग्य के सम्मुख प्रस्तुत कर सकते थे। मैं इससे बदतर किसी भी रात को याद नहीं कर सकता, जब ऐसा लगता था कि महान दीप के फव्वारे फट गए थे और स्वर्ग की बाढ़ उफान पर अलग–थलग हो गई थी। लेकिन हमारे पास न तो नूह की पोत थी और न ही वह टोकरी जिसने मूसा को बचाया था। हम केवल इतना कर सकते थे कि एक–दूसरे से लिपटें और प्रार्थना करें कि उखड़े हुए पेड़ हमारे ऊपर न गिरें।

जैसाकि खपरैल की छत में एक छेद के माध्यम से जैसे–जैसे पानी रिसता रहा, हमने अपने आप को सूखा रखने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन अन्त में भीग गये। हमारे घर में जो कुछ भी बचा था, उसके माध्यम से बहने वाली ठंडी हवा ने हमें ठंड में कंपकंपा दिया। यह वास्तव में जीने–मरने वाली एक रात थी।

भूख की पीड़ा ने हमारी नींद को लूट रखा था और हमारी माँ के लिए बहुत कम सम्भव था कि हम हर तरह से आराम करें। मुझे तब समझ में नहीं आया कि वह अन्दर ही अन्दर दुःखों के समन्दर के उफान से गुजरती हुई साहस करके अपने आँसुओं को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही थी।

उन्होंने हम पर प्रभाव डालने की कोशिश कीं कि खाने के लिए कुछ पाने हेतु थोड़ी देर तक हम प्रतीक्षा करें। उन्हें जो कुछ भी मिला, वह कुछ बचा हुआ गीला चावल और पका हुआ जंगली पालक था। लेकिन उस ठंडी रात में, भीगे हुए चावल परोसना सवाल से परें था। फिर उन्होंने हमें कुछ दिनों पहले खरीदे हुए आटे के साथ कुछ पेनकेक्स बनाने तक इंतजार करने के लिए कहा। इसे खाने के लिए मेरा कोई मन नहीं था, क्योंकि मुझे पता था कि वह इसे बिना किसी तेल के बनाएंगी और मुझे इसे बिना चीनी के खाना पड़ेगा।

उस दिन अनजाने में दिए गए दर्द को महसूस करने के लिए मैं बहुत छोटा था। एक बात जो हम जानते थे, वह यह थी कि हमारी माँ ने हमें आधारभूत विशिष्ट भोजन–वस्त्र प्रदान करने की स्थिति में नहीं थी। मेरी सारी किरकिरी बन्द हो गयी, जब खाना बनाने के लिए चूल्हा व ईंधन, वर्षा के पानी से भर चुका था। कभी भी हार न मानने वाली मेरी माँ ने मेरे लिए रखे कुछ पके हुए चावल को खोजने का प्रयास किया। उन्होंने खोज की, लेकिन वह तब तक नहीं मिली, जब तक कि लालटेन का तेल समाप्त नहीं हो गया।

मेरा डर, मेरी हताशा और मेरी बेबसी, मेरी माँ के प्रति गुस्से में तब्दील हो गई, जिन्होंने कभी माचिस खरीदने की अनुमति नहीं दीं, क्योंकि यह हमारी सामर्थ्य से परे भी था। हमारे घर के आस–पास के पड़ोसियों ने ही हमेशा हमारे लैंप को जलाया, लेकिन उस रात यह सवाल ही नहीं उठता था।

अपने ही घर में आभासी कैदी होने के नाते, मेरे पास सोने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं था। भूख, भय और हवा में ठिठुरन ने भी हमें उससे वंचित कर दिया था। हमारे विरूद्ध सारी बाधाएँ एक साथ खड़ी हो चुकी थीं, वह काँप उठीं और बुदबुदाने लगीं:

''याद रखो, जगदीश उद्धारकर्ता हैं और वह गिरे हुए को बचा लेते हैं।'' कांपती आवाज में मैं जानना चाहता था कि जगदीश कौन था। उन्होंने उत्तर दिया: ''वह ब्रह्माण्ड के भगवान हैं – भगवान जगन्नाथ। तुम्हें उनके नाम का जाप करना चाहिए जिससे तुमको कोई भूख नहीं लगेगी और न ही कोई पेड़ हमारे घर पर गिरेगा।''

यह सबसे अच्छा था, सांत्वना के रूप में जो वह हमें दे सकती थीं। इससे पहले कि वह बात को पूरा कर पातीं, गिरने वाले पेड़ की वजह से पास में एक बड़ा–सा शोर मच गया। मैं जोर–जोर से रोने लगा और आशंकित हुआ कि पेड़ के नीचे दबकर कोई जिन्दा भी होगा कि नहीं। डर से मैं अंधेरे में अपनी माँ की तरफ रेंगने लगा। मैंने डर के मारे उन्हें कसकर पकड़े रहा। पेट में बिना किसी अनाज के दाने के और हमारे आसपास घटित होने वाली इन सभी चीजों से मैंने भगवान जगन्नाथ के नाम का जाप करना आरम्भ कर दिया। मेरी भूख की अधिकता ने मेरे जप को और बढ़ा दिया। रात ने धीरे–धीरे एक नई सुबह को रास्ता दे दिया और गर्मी का मौसम सुकून देने लगा। हमें हिम्मत के साथ कदमताल करनी चाहिए और तबाही का गवाह बनना चाहिए क्योंकि आँधी और भारी बारिश ने तबाही मचाई थी। अभी भी बारिश हो रही थी, लेकिन हवा उतनी तेज नहीं थी। हमारे आश्चर्य के लिए, हमने पाया कि हमारे घर से कुछ ही इंच दूर एक ताड़ के पेड़ पर बिजली गिरी थी। 'यह हमारी जान ले सकता था' माँ ने कहा, परन्तु मैंने उन्हें याद दिलाया कि ऐसा नहीं हो सकता था, क्योंकि मैं जगन्नाथ का नाम जप रहा था।

मैंने उन्हें आस–पास में हुई तबाही दिखाई और बताया कि हम छत से टपकते हुए पानी से केवल भींगते हुए बेहतर तरीके से खड़े थे, परन्तु अभी भी जीवित हैं। हमारा घर क्षतिग्रस्त हो गया, लेकिन जमीनी तौर पर नहीं। इससे शायद मुझे भगवान जगन्नाथ के प्रति अपने विश्वास को फिर से स्थापित करने में मदद मिली। जैसे ही मेरी नजर हमारे घर की दूसरी ओर गई, मैंने एक उखड़े हुए केले के पेड़ को देखा। मुझे केले लेने की जल्दी थी। मैं पेड़ को काटकर इसके नरम आंतरिक तने को प्राप्त करना चाहता था ताकि माँ इसकी करी तैयार कर सके। यह मेरी भूख और इससे छुटकारा पाने की संभावना के बीच का संघर्ष था।

इससे पहले कि मैं यह तय कर पाता कि क्या करना है, मेरी मां ने सामने का दरवाजा खोल दिया। यह भी उतना ही विनाशकारी था। मैं शायद ही किसी छत को देख सकता था जो कभी घरों की दीवारों पर कायम था। तभी मेरा ध्यान आकर्षित किया सड़क पर पड़े नारियल ने। कुछ नारियल अभी भी पेड़ों से गिर रहे थे। माँ ने मुझे कुछ नारियल इकट्ठा करने के लिए कहा, लेकिन वे सारे पेड़ हमारे नहीं थे।

'क्या सही है' और 'भूख की पीड़ा' के बीच एक संघर्ष में, बाद वाले ने उस दिन जीत हासिल की थी। बहुत अनिच्छा के साथ हमने नारियल इकट्ठा करने के बारे में सोचा। अगर यह निराशा का ऐसा क्षण नहीं होता, तो माँ ने हमें नारियल छूने की अनुमति कभी नहीं दी होती। अपने बच्चों को खिलाने के लिए मातृ–वृत्ति ने उस दिन अपने आदर्शों को बेहतर किया। उन्होंने मुझे समझाने की कोशिश की कि कोई कैसे जान सकता है कि नारियल किस पेड़ से आया है। मेरे भीतर अभी भी सच्चाई और वास्तविकता के बीच संघर्ष था, लेकिन मैंने इस तथ्य के आगे घुटने टेक दिए कि नारियल के बिना हम कुछ और दिनों तक भूखे रहेंगे। जैसा कि मैंने नारियल एकत्र किया, मैं गिरते नारियल से घायल होने से बचने के लिए भगवान के नाम का जाप करता रहा। मेरी माँ मेरी ताकत थी और उन्होंने मुझे याद दिलाया कि यदि भगवान हमारी रक्षा करना चाहते हैं तो कुछ भी नहीं होगा। यह अकेले नारियल नहीं थे, हमने केले, पपीते और यहाँ तक कि नारियल के पेड़ों की पत्तियों को भी इकट्ठा किया, जो लीक हुई छत को कवर करने के लिए उपयोग किए जाते थे। पत्तियों का उपयोग ईंधन के रूप में भी किया जाता था।

श्रम ने मुझे थका दिया था और मुझे फिर से भूख लग गयी। अपनी भूख में भी मैंने, हम पर जगन्नाथजी के आशीर्वाद के बारे में सोचा। तब से भगवान जगन्नाथ के प्रति मेरी भक्ति और आस्था कई गुना बढ़ गई और जब भी मैं किसी कठिन परिस्थिति का सामना करता हूँ तो मुझे उनकी उपस्थिति का अहसास होने लगता है। हो सकता है कि यह मेरा विश्वास था या शायद यह मुझे अपने शरण में लेने की उनकी इच्छा, जहाँ वह मुझे देखना चाहते थे। हालाँकि मैंने कच्चा सामान इकट्ठा किया था, माँ के लिए खाना बनाना संभव नहीं था, क्योंकि चूल्हा अभी भी पानी के नीचे था।

इसलिए, हमने नारियल पानी पिया और इसके कोमल गूदे (पल्प) को खाया। खाना आरम्भ करने से पहले मैंने अपने पड़ोसियों को अपना हिस्सा लेने के लिए बुलाया। यह मेरी दोषी भावना से छुटकारा पाने का एक तरीका भी था। रात के अंधेरे ने अंततः धूप का रास्ता दे दिया था, लेकिन आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे फ़्योडोर दोस्तोयेव्स्की के अपराध और सजा से प्रसिद्ध पंक्तियाँ याद आती हैं:

''दुःख जितना गहरा, ईश्वर उतना ही निकट!'' वास्तव में भगवान जगन्नाथ का जप, हमारे तमाम बाधाओं में सहारा का माध्यम बना।''

मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि जब से मेरी माँ ने मुझे भगवान जगन्नाथ से मिलवाया, मुझे मेरे अन्दर एक नई ऊर्जा का एहसास हुआ। मेरा मानना है कि मैं हमेशा भगवान जगन्नाथ के आशीर्वाद का आनन्द लेता हूँ। मैं अपने साथी मनुष्यों और अपने समाज के लिए जो कुछ भी कर रहा हूँ, मुझे विश्वास है कि भगवान जगन्नाथ ने ही इसके लिए मुझे रास्ता दिखाया है और मुझे उस रास्ते पर आगे बढ़ाया है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह, मुझे समाज के लिए और अधिक करने के लिए आशीर्वाद देना जारी रखेंगे, जैसाकि मैंने पूरी तरह से स्वयं को, उनके कमलवत चरणों के नीचे आत्मसमर्पण कर दिया है।

भूख

जब मैं अकेला होता हूँ, उस दौरान मेरे सामने मेरे बचपन की तस्वीर आ जाती है और मेरे हाथ स्वतः मेरी नम आँखों को पोंछते हैं। गरीबी के साथ मेरे अंतःपटल पर, किसी भी कीमत पर जीने का मेरा संकल्प और मुझ पर मेरी माँ का आशीर्वाद, मेरी ताकत बनी रही। कभी–कभी लोग मुझसे पूछते हैं कि गरीबी में कितनी ताकत हो सकती है, क्योंकि दुनिया जानती है कि गरीब शक्तिहीन है और गरीबी बड़े पैमाने पर लोगों की कमजोरी है। लेकिन, मैंने अपनी कमजोरी को अपनी ताकत में बदल लिया। गरीबी को कभी भी निर्धारित नहीं किया जा सकता है। निरपेक्ष या सापेक्ष गरीबी जैसी परिभाषाएँ और विभाजन पूरी सच्चाई नहीं बताते हैं। शायद मैं गरीबी के साथ पैदा हुआ था। मेरे पिता इतने उदार और दयालु थे, जो पहले से ही अपने साधनों से परे लोगों की मदद करके एक कंगाल बन गए थे। अभाव की उस हालत में वह मेरी माँ के आगोश में सात भाई–बहनों को असहाय छोड़कर स्वयं स्वर्गवासी हो गये।

मेरी माँ ने पूरे साहस और दृढ़–संकल्प के साथ मुझे और मेरी बहन को पाला। मदद करने वाली नौकरानी के रूप में काम करना, या कुछ सिक्कों के लिए चावल बनाना या फिर हमारे लिए खाना पकाने के लिए जंगली पालक इकट्ठा करना, उन्होंने हमें जीवित रखने के लिए सब कुछ किया। हालाँकि मानवीय भावनाओं, परोपकार, जीवन के लिए उसका दृष्टिकोण उस समय बदल गया था, लेकिन वह कभी नहीं भूलीं कि वह अपने बच्चों के लिए बहुत प्यार करने वाली माँ थी। वह विनम्र, दयालु और स्वाभाविक प्रवृत्ति वाली महिला थीं। हर माँ की तरह वह चाहती थी कि उनके बच्चे आराम से जीवन व्यतीत करें लेकिन वे उनके सपने थे और वह कभी नहीं जानती थी कि एक दिन उनके सपने हकीकत में बदलेंगे या नहीं।

मुझे वह दिन याद है, जब मैंने गौर किया था कि मेरी मेरी माँ मुझसे बहुत स्नेह करती थीं। शायद वह मुझसे सबसे ज्यादा प्यार करती थीं, लेकिन जिस तरह से यह पता चला था, उन्हें भी झटका लगा था। मेरे पिता की मृत्यु के बाद मेरे बड़े भाई, जो जमशेदपुर में रहकर टाटा में अनुपूरक आधार पर नौकरी करने का प्रयास कर रहे थे, गाँव में घर पर वापस आ गए थे। लम्बे समय–अंतराल पर मेरी माँ अपने बड़े बेटे को देख रही थीं, इसलिए स्वाभाविक था कि वह उनके लिए आराम और स्नेह से देखने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरततीं। हमारा घर एक ऐसा घर था, जहाँ सभी खाद्य कंटेनर हमेशा खाली रहते थे। हम सभी अगले दिन के लिए केवल बिना किसी निश्चितता के क्षणों को जी रहे थे। चूँकि घर में कुछ भी नहीं था, मेरी माँ किसी पड़ोसी के यहाँ से कुछ चूड़ा, चपटा चावल माँगने के लिए दौड़ी। यह था कि पूरे गांव में वह कुछ माँग सकती थी और वह उपलब्ध हो सकता था। चूड़ा केवल भूख की आग को बुझा सकता है लेकिन मिठाई या दही के बिना या किसी अन्य तैयारी के कभी भी स्वादिष्ट नहीं हो सकता। मेरी माँ को एक घर से चूड़ा मिला था, लेकिन उनके बेटे को केवल चूड़ा नहीं खिलाया जाना चाहिए, बल्कि उसे कुछ और दिया जाना चाहिए। इसलिए उन्होंने रसोई में चूड़ा का वह कटोरा छोड़ दिया और कुछ चीनी या गुड़ उधार लेने के लिए तत्काल पड़ोसी के यहाँ चली गई। उस समय, जब मैं अपनी माँ को खाने के लिए कुछ देने के लिए कहने के लिए बाहर से लौटा तो मुझे चूड़ा का कटोरा मिल गया। उस समय मैं भूखा था और कल रात भी भूखा था, क्योंकि घर पर खाने के लिए कुछ नहीं था। चूड़ा का कटोरा मुझे लुभा रहा था और मैंने वही खाना शुरू कर दिया। मेरी माँ ने, मेरे हाथ में थोड़ी चीनी के साथ मुझे चूड़ा खाते हुए देखा, जो वह अपने बड़े बेटे के लिए लाई थी। गुस्से के कारण वह छड़ी पकड़कर मुझे पीटने के लिए दौड़ती हुई आई।

उस समय इस तथ्य के लिए वह अपने आप को इतना असहाय महसूस कर रही थीं कि वह जमशेदपुर से आने वाले अपने बेटे को खाने के लिए कुछ भी नहीं दे पा रही थीं।

Bond of a lifetime: Achyuta Samanta with his mother

मेरी पिटाई करने के लिए जब वह दौड़ीं, बचने के लिए मैं इधर–उधर भागने लगा और उस प्रक्रिया में उनकी छड़ी का अग्र भाग मेरी बाईं आँख के निकट लग गया। छड़ी ने मेरी आँख के ऊपरी हिस्से पर एक निशान–सा छोड़ दिया और वहां से खून की बूंदें टपकने लगीं।

जब मेरी मां ने खून बहता देखा तो वह खून देखकर एकदम बेहोश हो गईं। कोई मुझे अस्पताल ले गया और मैं अपनी माँ को अभी भी रोते हुए देखने के लिए अपनी आँखों पर एक छोटी सी पट्टी के साथ लौटा, जो उस समय स्वयं को ही दोषी ठहरा रही थीं।

उस समय मैंने महसूस किया कि गरीबी, मानवीय संबंधों को कैसे तोड़ सकती है। मुझे एहसास हुआ कि मेरी माँ कितनी असहाय थी और वह अपने बच्चो से कितना प्यार करती थी। ऐसा नहीं था कि वह अपने बड़े बेटे को ज्यादा पसंद करती थी या वह चूड़ा खाने के लिए मुझसे नाराज थी, लेकिन यह बेटे के लिए उसकी ममता थी, जिससे वह लम्बे समय के बाद मिल रही थी और यह उसकी बेबसी थी कि वह उसे नहीं दे सकती थी, जो कल रात से उसके छोटे बेटे ने कुछ नहीं खाया था। उसने मुझे गले से लगाया, मुझे चूमा और यहाँ तक कि एक क्षमाप्रार्थी की भाँति असंवेदनशील होने के लिए स्वयं को दोषी ठहराया।

मैं पूरी स्थिति को समझ सकता था, लेकिन उनकी आँखों से आँसू पोंछने के अतिरिक्त मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था। कहने की कोशिश कर रहा था कि मुझे कुछ नहीं हुआ है, देखिए इससे मेरी आँख पर चोट नहीं लगी है, केवल बाहर जैसा ही मैं घूमता रहा। उस समय मैं अपनी माँ को सांत्वना देने की कोशिश कर रहा था और शायद यह गरीबी और भूख का सबसे कुरूप चेहरा था, जिसे माँ और उसके बेटे दोनों ने देखा था।

स्वनिर्मित व्यक्ति

उत्सव आने पर मैं रंग, ध्वनियों और उसकी भव्यता की स्मृति के कूचे में उदासीन आकर्षण से अनिर्दिष्ट आंतरिक आनंद से घिरा हुआ हूँ। हिन्दू कैलेंडर के कार्तिक माह के अंत तक गणेश पूजा के बाद त्योहारी मौसम आरम्भ होता है। मैं गाँव में कैसे पला–बढ़ा, मेरे स्कूली जीवन और बचपन के दिनों की कहानियाँ मेरी स्मृतियों को गुदगुदाती हैं। लगभग चार दशक पहले, मैं ओडिशा के कटक जिले के कलारबंका में एक दूरदराज के गाँव में रहता था। गाँव बड़ा विचित्र था और वहाँ पर बुनियादी सुविधाओं और यहाँ तक कि बिजली की भी कमी थी। नदी के किनारे एक संकरी सड़क थी, जिसके पार ज्यादातर मामूली घर बनाए गए थे। यहां तक कि एक अच्छे आरामदायक जीवन के लिए कोई सुविधा न होने के बावजूद भी मेरे गाँव का वातावरण अपने हरे–भरे आवरण, सदा स्वागत करती हुई महान महानदी की सहायक नदी, पाइका नदी, गर्मजोशी से स्वागत करने वाले उत्साही लोगों और मंदिरों के ढेरों के साथ अद्वितीय था।

'पूजा' की अवधि गाँव के प्रत्येक सदस्य के लिए विशेष थी। दिलचस्प बात यह कि हमारे गाँव में त्योहारों का पता 300 ग्रीष्मकाल पूर्व लगाया जा सकता है। दुर्गा पूजा और काली पूजा हमारे द्वारा स्वीकार किए जाने वाले कई त्योहारों में सबसे अधिक मनाई गई थी। दूरदराज काम करने वाले लोग सपरिवार एक जगह एकत्रित होकर यह अनुष्ठान बड़ी श्रद्धा से एकजुट होकर मनाते थे। पारंपरिक केक, मिठाइयाँ और पोशाकें बनाई और वितरित की गईं। महिलाओं और बच्चों ने इस अवसर के लिए नए खरीदे गए परिधानों में सबसे अच्छे कपड़े पहने। हर दिल में प्रसन्नता एवं वासन्तिक पर्व को महसूस किया जा सकता था। इसकी तुलना पश्चिमी ओडिशा में नुआखाई उत्सव के साथ की जा सकती है।

घर की तरह हमारी गौशाला दुर्गा मंदिर के केंद्र में स्थित थी, जिसने हमारे और पूरे गाँव के बीच भक्ति और धार्मिकता की एक निश्चित आभा जागृत की।

झाँझ की आवाज में सामूहिक नृत्य एवं हर्षोल्लास भरा आनन्ददायक त्यौहार मन में हलचल बिखेरता है। कुछ यादें हमारे मस्तिष्क में इस तरह की अमिट छाप छोड जाती है कि वह अपनी वार्षिक घटना के हर समय जीवन्त हो जाती है। दुर्गा पूजा मेरे पैतृक गाँव कलारबंका की सभी यादें लेकर आती है। उत्सव के पाँच दिनों के दौरान नए कपड़े पहनने के लिए यह एक सम्मेलन था। मैं जिन पूजाओं को याद कर सकता था, उनमें से मेरी दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी और मेरे भाई ने एक दूर की जगह पर काम किया, जो पर्याप्त भुगतान नहीं मिलता था। मेरी छोटी बहन, इति और मैं कुछ पूजा के दौरान अकेले जीर्ण–शीर्ण घर में रहते थे, जैसाकि माँ हमारे भाइयों के साथ आएंगी और रहेंगी। उस अवधि के दौरान, नए कपड़े और शानदार–तृप्त भोजन एक ऐसी विलासिता थी, जिसे हम बर्दाश्त करने का सपना भी नहीं देख सकते थे।

हमने लोगों को स्वादिष्ट भोजन बनाकर खाते हुए देखा परन्तु हमें किसी ने हमें कभी पूछा तक भी नहीं। हमने लोगों को त्यौहारों का भरपूर आनन्द लेते हुए देखा है और हम दूसरों के इस आनन्द को देखकर अपने स्वर्गिक आनन्द में खुश थे। यहाँ तक कि गरीब लोग भी पूजा के दौरान अपनी क्षमता के अनुसार नए कपड़े पहनने की इच्छा रखते हैं।

इति और मैं अपने बड़े भाई से नए कपड़ों की एक जोड़ी प्राप्त करते थे, जिसे हम अगले उत्सव की अवधि तक पहनते थे।

हम अब भी अपने भाई से प्राप्त किये बेशकीमती तोहफे को बेहद गर्व और खुशी के साथ पहनते हैं।

अपने घर पर अकेले रहकर, मैंने "दलमा" (दाल और सब्जी का सूप) और चावल का एक अनलंकृत भोजन बनाया और अगले 5 दिनों तक पूजा की। किसी न किसी तरह, हम अपनी छोटी–छोटी खुशियों के साथ

दुर्गा पूजा के माध्यम से मिलते थे और जीते थे। हमारे गाँव में दुर्गा पूजा एक और अल्पांश के लिए यादगार थी, जो हर वर्ष 'मेला' के रूप में आती थी और आस–पास के लोग खुशी और पारंपरिक मेला मनाने के लिए एकत्रित होते थे।

मैंने सोचा कि अपनी बहन की मदद से मेले में गुब्बारे बेचने के लिए एक छोटा सा स्टाल लगाऊंगा।

गुब्बारे बेचने के वे चार दिन मेरे लिए सुखद थे, क्योंकि इसने मुझे स्कूल और काम की दोहरी पारी के भार के बिना आय का एक स्रोत दिया था। यह तब शुरू हुआ जब मैं कक्षा 4 में था और अपने स्कूली जीवन के अंत तक जारी रहा। प्रत्येक दिन के अंत में मैं उन पैसों की गिनती करता, जो मैंने बेचकर कमाए थे और सौभाग्य से मैंने जीवित रहने के लिए थोड़ा अधिशेष अर्जित किया। यह आय मुझे बहुत खुशी देती थी, क्योंकि यह कड़ी मेहनत और ईमानदारी का प्रतिफल था जो कभी–कभी कितना सुखद अनुभति कराता था। हालाँकि हम गरीब थे, फिर भी मेरी माँ ने हमेशा हमें सलाह दी कि हम किसी को धोखा न दें, बेईमानी न करें अथवा आसान पैसे कमाने का लक्ष्य न रखें। मुझे वे दिन याद हैं जब लोग रसगुल्लास और स्वादिष्ट व्यंजन खाते थे, जबकि कोई भी व्यक्ति हमें खाने या हमें पूछने के लिए परेशान नहीं करता था। लेकिन वे हमारे आस–पड़ोस में अपने आप में अच्छा खाना खाने का पूरा आनन्द ले रहे थे।

मेरी माँ के शब्द अब भी मेरे कानों में गूँजते हैं। ओडिया में वह कहती है–

''जाके लोके ना कहले भलो, से जियाता जीवन मारलो'' जिसका अर्थ है: यदि एक मानव जीवन को दूसरों द्वारा सराहा नहीं जाता है तो वह जीने लायक नहीं है।

यदि किसी के जीवन काल में उसका सत्कार नहीं किया जाता है, तो वह जीवित, मृत के समान है। मैंने इसे अपने जीवन के उपदेश के रूप में रखा है और निःस्वार्थ भाव से अपना काम करता रहा हूँ। मैं ईमानदारी के रास्ते से भटक नहीं रहा हूँ, यहाँ तक कि संगठनों को चलाने में एक छोटी सी प्रसिद्धि के साथ के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. को चला रहा हूं। मैं अपनी आखिरी सांस तक ऐसा ही करता रहूँगा।

दुर्गा पूजा की तरह, काली पूजा भी मेरे गाँव में बड़े हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाई जाती है। यह बहुत प्रसिद्ध है और पूजा के दौरान एक बड़ा मेला भी लगता है। भोजन, मौज–मस्ती मेले का हिस्सा हैं। कई फूड स्टॉल लगाए जाते हैं। बाहर काम करने वाले गाँव के लोग भी पूजा के दौरान घर आते हैं, उत्सव के चौराहे पर परिवार और दोस्तों के पुनर्मिलन का समय होता है। ग्रामीणों को मेले में घूमना–फिरना, चाट और मिठाइयाँ खरीदना बहुत पसंद था और इसे दिली–तमन्ना के साथ खाते थे। यह एकमात्र समय था जब वे बाहर का खाना खा सकते थे और इसके लिए वे तैयार रहते थे। इति और मैं मेले में जाते, घूमते और बच्चों और दोस्तों के साथ मस्ती करते। हम अधिभारित माहौल में खुश रहे, भरपूर आनंद और भव्यता देखें, लेकिन कभी भी उस चीज की माँग नहीं किये जो हम बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। हमारे अपने रिश्तेदार अपने बच्चों को लाड़–प्यार करते, लेकिन हमें कभी भी आलू चॉप, बारा या रसगुल्ला के लिए न कभी पूछा और न ही हमें कभी दिया। उस समय से मैंने अपमान को समझा कि यदि किसी के पास कोई सहारा, समर्थन या स्तम्भ नहीं है तो उसे एक बच्चे के रूप में इसका सामना करना पड़ता ही है।

त्योहारों के दौरान भी किसी रिश्तेदार ने हमें चॉकलेट या मीठा या गुब्बारा नहीं दिया। हम लोगों के माता–पिता को अपने बच्चों से प्यार करते, उन्हें लाड़–दुलार करते, उन्हें उपहार खरीदते, मिठाई खिलाते और अपनी अगली पीढ़ी के प्रति अपने प्यार का इजहार करते देखते। हम इसे दूर से ही देखते। हमें इस तरह की कमी महसूस तो हुई, लेकिन हमारे पास शिकायत करने के लिए कभी कुछ नहीं था। हम कभी सहानुभूति नहीं चाहते थे। हमने कभी माँगा भी नही। मुझे वे दिन याद हैं और यही कारण है कि आज मैं लाखों बच्चों को मुस्कान देने के लिए सब कुछ करता हूँ।

मेरा एकमात्र जुनून आज वंचितों में खुशी फैलाना है। मैं 1000 लोगों को बख्शीश देना और जरूरतमंदों को वित्तीय सहायता देना कभी नहीं भूलता।

काली पूजा के दौरान, मैं हमारे द्वारा स्थापित कलारबंका में दो स्कूलों के बच्चों को मिठाई, नाश्ता वितरित करता हूँ और शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे याद है कि किसी ने हमें कई पूजाओं में कुछ नहीं खिलाया और इसीलिए मैंने कलारबंका में बच्चों को भोजन वितरित करने का मौका कभी नहीं छोड़ता।

शिक्षा के माध्यम से लाखों लोगों के लिए गरीबी और कष्टों को दूर करने के लिए मैं गुब्बारा विक्रेता से एक मध्यम–वर्ग तक उठने के लिए अपने आप को धन्य मानता हूँ। आज, परमेश्वर ने मुझे उसी गाँव में वापस जाने और बच्चों में मुस्कान और खुशियाँ बिखेरने में सक्षम बनाया है। मुझे इससे खुशी मिलती है। यह बिना सोचे समझे अनकही भावना है जो मुझे बच्चों से वंचित न होने का सुखद अनुभव देकर मिलती है। लेकिन तब और अब में एक बात आम है –

मुझे लोगों में खुशी और आशा का प्रसार करके खुशी मिलती है।

मुझे वे अनुभव याद हैं और मैं इसे हर दिन जीता हूँ। एक आदमी अतीत से अनुभवों का एक योग है। मैं कई बार समाज में व्याप्त विषमताओं पर दुखी होता हूँ, परन्तु मुझे महसूस होता है कि पाँचों उंगलियाँ एक जैसी नहीं हो सकतीं। मैंने एक सबक

सीखा है कि व्यक्ति दूसरों को देने के छोटे कृत्यों द्वारा लोगों में खुशियाँ फैला सकता है। समाज की भलाई के लिए अच्छे इरादे की शक्ति सभी उदासी को ठीक कर सकती है। एक सच्चा जीवन तब जीया जाता है जब कोई अतीत से अनुभव लेता है और विकास की प्रक्रिया एवं इसका उपयोग साथी मनुष्यों को संभावित छोटे तरीके से उसी अनुभव को भुगतने नहीं देता है। व्यक्ति को अपना अतीत कभी नहीं भूलना चाहिए। मुझे हमेशा याद है कि मेरी माँ क्या कहती है, ''थिली काना, हेली काना, हेबी काना'' हमेशा इस बात का ध्यान रखती है कि आप क्या थे, आप क्या हैं और आप क्या होंगे। सभी काल को जटिल रूप से जीवन नामक खेल से जोड़ा जाता है। यदि कोई इस बात से बेखबर है, तो व्यक्ति जीवन और जीवन की नैतिकता को भूल जाता है।

मानव होने के नाते मानवता

मानवता एक छोटा शब्द है और शब्द का अर्थ कभी भी इसके पीछे के महत्व और भावना को सही नहीं ठहरा सकता। यह सभ्यता और मानव जाति की प्रगति के पीछे मुख्य अहमियत है। यह एक और सभी के लिए आंतरिक और सहज है। सरल और पारंपरिक समाज में, मानव जीवन कम जटिल था और मानव बंधन अधिक मजबूत थे। निर्दोष जीविका के परिवर्तन के साथ एक आधुनिक और अत्याधुनिक युग और जीवन शैली के लिए मानवता का सम्मान घट रहा है। जितना ऊँचा स्थान दिया जाता है, वह अन्य मानव सम्बन्धों के बारे में उतना कम सोचता है, हमारे समय का यही विरोधाभास है।

मान के रूप में मानवता को प्रेरणा दी जानी चाहिए। परोपकार की छोटी–छोटी हरकतें, बदलाव के लिए बड़े पैमाने पर लहरें पैदा कर सकती हैं। यह आँसू पोंछने, खुशी फैलाने और मुस्कुराने में मदद कर सकता है। यह देने वाले और लेने वाले दोनों को अपार खुशी देता है। दया और करुणा के छोटे और यादृच्छिक कार्यों से संतुष्टि मिलती है, जो मानवतावाद के अलावा और कुछ नहीं है। इंसानियत के जरिए दुख और पीड़ा को समाप्त किया जा सकता है।

मैं मानवता और सेवाभाव के मूल तात्पर्य को सीखकर बड़ा हुआ हूँ। यह मेरे जीवन का लोकाचार बन गया है। मैं जरूरतमंद और व्यथित लोगों को सहायता प्रदान करता रहता हूँ। मैं पिछले कुछ वर्षों में दयालुता के कई कृत्यों के बारे में कुछ किस्से साझा करना चाहूँगा, जो मैंने पिछले 30 वर्षों में किये हैं।

पिछले महीने, मैंने लगभग 4 अनाथ लड़कियों और उनकी दुर्दशा के बारे में 'समाज', ओडिया दैनिक समाचार पत्र में पढ़ा। असहाय लड़कियों ने अपने पिता को कुछ दिन पहले और माँ को पाँच वर्ष पूर्व खो दिया था। उनके परिवार में एकमात्र रोटी कमाने वाले की मृत्यु के बाद उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था। उनमें से सबसे बड़ी स्नातक डिग्री कर रही है, जबकि अन्य तीन लड़कियाँ स्कूल में पढ़ रही हैं। हमने तुरन्त उन्हें उनके खर्चे के लिए कुछ नकद भेजा और उन्हें हर महीने वित्तीय सहायता का आश्वासन दिया। हमने, उनमें से एक ज्येष्ठ सुपुत्री को उसकी स्नातक डिग्री पूरी होने के बाद के.आई.एस.एस., पुरी में एक नौकरी की पेशकश की। इसके अतिरिक्त, अन्य तीन के बीच में से दो को के.आई.एस.एस., पुरी में उच्च शिक्षा में अगले वर्ष दाखिला दिया जाने का, जबकि सबसे कम उम्र की बच्ची को केन्द्र विद्यालय में नामांकित किये जाने का आश्वासन दिया। मानवता के कार्य पर एक आदर्श।

कटक–पारादीप मार्ग में हाल ही में एक सड़क दुर्घटना में, मैंने उन लोगों के परिवार के सदस्यों को समर्थन दिया, जिनकी मौके पर ही मौत हो गई थी। हमने उन्हें तत्काल मदद के लिए नकद राशि दी और यह सुनिश्चित करने के लिए मृतक के परिवार के 3 लोगों को रोजगार की पेशकश की कि परिवार को इस अपूर्णीय क्षति का सामना करते हुए दोनों छोरों को पूरा करने के लिए दबाया नहीं जाए। अपनी क्षमता में, मैंने एक खुशहाल जीवन जीने के लिए परिवार और उसकी अगली पीढ़ी की मदद करने की कोशिश की। – कार्रवाई में मानवता का एक और उदाहरण।

उपरोक्त दोनों मामलों में मैंने तत्काल मदद का विस्तार करने और एक स्थायी समाधान प्रदान करने का प्रयास किया। समाज में पीड़ा, दर्द और दुखों का कोई अंत नहीं है। लेकिन हम अपना काम कर सकते हैं। मैं कभी–कभी उदासीनता की रेखा से नीचे चला जाता हूं और उन लोगों की दया को याद करता हूं जिन्होंने हमारे परिवार को अँधेरे की परिस्थितियों में सबसे अधिक मदद की और आज इसे एक पूर्ण चक्र के रूप में पाया।

मैं अभी भी अपने बचपन के अत्यधिक दर्द भरे स्मृति को याद करता हूँ, जब सात बच्चों और एक विधवा माँ को छोड़कर, भूमि, घर या धन के एक टुकड़े के बिना मेरे पिता असमय स्वर्गवासी हो गए थे।

मैं मात्र चार वर्ष का था और मेरा सबसे छोटा भाई एक महीने का था, जब ट्रेन दुर्घटना में मेरे पिता के निधन की खबर मेरे बड़े भाई को सुबह 5 बजे मिली। मेरा भाई जो 16 वर्ष का था, वह समाचार पाकर अस्पताल चला गया। मेरे पिता के शव को सफेद चादर से ढँके देखने के बाद वह गहरे शोक और पश्चाताप में डूब गया, इससे इनकार की स्थिति साफ हो गयी। वह शव का दावा करने और अंतिम संस्कार के लिए घर लाने के लिए मेरी माँ से सहमति लेने के लिए वापस आया। मेरी माँ ने चुप्पी साध ली।

मेरी माँ, जो 40 वर्ष की थीं, उन्हें इस त्रासदी का सामना करने का साहस नहीं था। वह पूरी तरह से टूट चुकी थीं। अचानक सारा बोझ उस पर आ पड़ा। गरीबी, भूख और अपमान के बीच बच्चों को किसी और के समर्थन के बिना लाये, उनके लिए बहुत बड़ा काम था। नियति के इस आघात से उसका जीवन तबाह हो गया। कुछ रिश्तेदारों ने सांत्वना दी, लेकिन इस तरह के दारूण दुःख के दौरान वास्तव में उन्हें कुछ भी शान्ति नहीं मिल सकी।

मेरे पिता की मृत्यु का समाचार सुनने के बाद, कुछ काबुलीवाला (पारंपरिक धन उधारदाता), पिता द्वारा लिए गए ऋणों को पुनः वापस पाने के लिए हमारे घर आए थे। मेरी माँ को इस तरह के उधार के बारे में पता नहीं था। धन उधार देते समय वे बहुत अनुकूल होते हैं लेकिन आमतौर पर जब कोई चूक करता है तो वह निर्दयी हो जाते हैं।

जब काबुलीवाला ने हमारे जीवन के कारुणिक–मार्ग को देखा, एकमात्र कमाने वाले सदस्य का नुकसान हुआ था और सात भाई–बहनों के भरण–पोषण या अंतिम अनुष्ठान के लिए कोई पैसा नहीं था, तो उन्होंने यह सोचकर छोड़ दिया कि वे हमारे असहाय गरीब परिवार से कुछ भी वापस नहीं पा सकते हैं। ऐसे कट्टर काबुलीवाला जो भुगतान न करने की स्थिति में उधारकर्ताओं को परेशान करने के लिए जाने जाते हैं, उन्होंने हमारे परिवार से अपने पैसे वापस नहीं मांगे और हमारे घर पर परोपकार का बोझ डाल हमारी जुबान बांध दी। यह मानवता का उदाहरण है, जिसे मैंने अपने जीवन में शुरुआती अनुभव किया था।

मेरे पिता के कुछ सहयोगियों ने मेरे पिता की मृत्यु के बाद सांत्वना देने के लिए घर आए थे। वे जानते थे कि मेरे पिता एक अच्छे इंसान थे, लेकिन बहुत गरीब थे। वे यह भी जानते थे कि पिता की मृत्यु के बाद परिवार के पास खाने के लिए कुछ नहीं था।

मेरे पिता के चार सहयोगियों ने हमारे परिवार को मूलभूत किराने का सामान और सब्जियाँ प्रदान करके संकट के इस घड़ी में समर्थन करने के लिए आगे आए ताकि परिवार भूख से न मरे।

आज हम जीवित हैं और मानवता के कारण हमें जो दिखा, हमने ऊँचाइयों को बढ़ाया है। मेरी माँ को दुर्घटना में बीमा कवर और जमा राशि प्राप्त करने के लिए कंपनी द्वारा दिए गए स्टाफ क्वार्टर को खाली करने के लिए कहा गया था। हमने सोचा कि हम बेघर हो जाएंगे।

लेकिन एक दूर के रिश्तेदार, जो स्वयं एक कमरे के घर में रहते थे, ने हम सभी को रहने के लिए अपना बरामदा और रसोई घर दिया। हम वहाँ चले गए और छह महीने तक वहाँ रहे।

आश्रय हमें तब दिया गया जब हमारे जीवन ने प्रयोजन खो दिया था। मानवतावाद के इस कृत्य ने हमें निराशा और मोहभंग के समय में आश्रय दिया।

मैं अपने अनुभव के माध्यम से 1970 से इस मानवतावाद को देख रहा हूं और महसूस कर रहा हूँ। मानवतावाद के बिना, 8 लोगों का यह परिवार तबाही, उदासीन और अपरिचित होगा। हम वही हैं, जो अतीत में हमारे प्रति विस्तारित करुणा के कारण हैं और हम हमेशा अतीत में निहित रहेंगे और समानुभूति, प्रेम, और करुणा के साथ सभी को समान रूप से विस्तारित करेंगे। समाज, राज्य और देश के लिए मैं योगदान करने में सक्षम नहीं हो पाता, यदि मेरे जीवन में मानवतावाद की बड़ी भूमिका नहीं होती।

महान लोगों ने अपने जीवनकाल में अनुभव की गयी मानवता के स्पर्श के कारण ही महान कार्य किए हैं। वे महान बने रहे, क्योंकि यह उनके कार्यों और शब्दों में परिलक्षित होता है। मैंने इसकी शक्ति को महसूस किया है और चार साल की उम्र से इसके साथ रहता था। इसमें कुछ भी खर्च नहीं होता है, लेकिन आत्मा और समाज में बड़े पैमाने पर कई गुना वापस मिलता है। डेसमंड टूटू क्या कहते हैं, जो नीचे उद्धृत है:

"तुम जहाँ भी हो, वहाँ अपना थोड़ा सा अच्छा करो; यह उन छोटे टुकड़ों को एक साथ रखता है, जो दुनिया को अभिभूत करते हैं।" वह आपके जीवन और दुनिया की अधिकतम सीमा में रहने के लिए बेहतर जगह होगी।

के.आई.आई.टी. की नींव रखी

संघर्ष

हिमालय की तलहटी में पक्षियों के चहकने की आवाज सुनकर मेरा मन एक शाँत और आश्चर्यजनक विन्यास के बीच बेचैन हो रहा था। शाँत वातावरण तेजी से विचारों को विश्रान्ति प्रदान करने में विफल रहा। अनिद्रा और बेचैनी की स्थिति में मैं कल रात की यात्रा के बारे में सोच रहा था।

मैं मेफेयर हिमालयन स्पा रिसॉर्ट में था, जो बंगाल के पहाड़ी शहर कलिम्पोंग में स्थित लक्जरी और विरासत का एक शानदार अनुष्ठान था।

मेरे व्यस्ततम कार्यक्रम में से, मुझे कलिम्पोंग में कोयला और इस्पात पर संसदीय स्थायी समिति की बैठक में भाग लेने के लिए उस समय निकालना पड़ा।

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक जी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मुझ पर विश्वास किया और मुझे राज्यसभा सदस्य के रूप में राज्य का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान किया। सब कुछ सही था, लेकिन फिर विचारों के एक अजीब भँवर ने मेरी अन्यथा शाँत रचना को विचलित कर दिया। मैं इस रात के अनुभव को सभी के साथ साझा करना चाहता हूँ।

मुझे 28 अगस्त की रात को कलकत्ता के लिए एक ट्रेन पकड़नी थी और अगले दिन कलकत्ता से बागडोगरा के लिए उड़ान भरने के बाद बागडोगरा हवाई अड्डे से कलिम्पोंग तक तीन घंटे की कार ड्राइव करनी थी। ट्रेन की यह यात्रा बहुत आरामदायक थी, लेकिन मैं नींद के कारण नहीं जा सका। एक पल में मेरे मस्तिष्क में छवियाँ घूम गईं।

मुझे मानसिक रूप से 26 साल पहले जीवन की यात्रा पर ले जाया गया था। मैं पिछली ट्रेन यात्रा में खो गया था और एक विशेष यात्रा बाहर खड़ी थी।

के.आई.आई.टी.–आई.टी.आई. के प्रारंभिक वर्षों 992–95 में मुझे प्रयोगशाला सामग्री और उपकरण खरीदने के लिए एक महीने में चार बार कलकत्ता की यात्रा करनी पड़ी।

मेरे पास स्लीपर क्लास का टिकट खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, अकेले वातानुकूलित सीट पर जाने दिया।

कलकत्ता की मेरी यात्रा ज्यादातर जगन्नाथ एक्सप्रेस में सामान्य श्रेणी में थी, जिसमें बैठने के लिए लक्जरी नहीं थी।

मैं कई बार पूरी रात खड़ा होकर, कभी–कभी बदबूदार शौचालयों और डिब्बे के दरवाजों के पास, कभी–कभी अपनी आँखों को बंद करने से नींद आने की जरूरत होती है।

भाग्यवश, तीन से चार घंटे तक खड़े रहने के बाद अपने पतले शरीर को बैठने के लिए एक प्रस्ताव प्राप्त करने के लिए पर्याप्त जगह की खोज करने में कामयाब रहा। कलकत्ता के लिए यह एक यात्रा है जो कई कठिन लोगों की भीड़ के बीच मेरी याद में दुख की बात है।

ऐसी ही एक यात्रा मुझे याद है, श्री पी.के. साहू, के.आई.आई.टी.–आई.टी.आई. के संस्थापक कर्मचारी, जिन्होंने अगस्त 1992 में मेरा साथ दिया था।

हम दोनों ने सामान्य श्रेणी में ट्रेन से कलकत्ता की एक लंबी थका देने वाली यात्रा की। हम सुबह कलकत्ता पहुँचे। हमारे ठहरने की जगह बुक नहीं की गई थी, न ही हमारे पास एक के लिए देने को पैसे थे। "मेरे मित्र का घर बेहद करीब है। हम वहाँ अपनी प्रातःकालीन नित्यक्रिया पूरी कर सकते हैं।'' साहू बाबू ने एकस्वर में कहा।

भिखारियों के पास कोई विकल्प नहीं होता। उन दिनों मेरी स्थिति एक भिखारी की तुलना में अधिक दयनीय थी, क्योंकि मेरे पास दया का विलास नहीं था। मैंने एक बार में ही साहू बाबू की योजना स्वीकार कर ली।

हम साहू बाबू के मित्र के घर की ओर चलने लगे। हम कलकत्ता की व्यस्त सड़कों से होते हुए, बारिश में भीगते हुए, एक–डेढ़ घंटे तक चले, रिक्शा चालकों ने अपना रास्ता साफ करने के लिए अजीब सी आवाजें निकालीं और हम एक ऐसी जगह पहुँचे जो सर्वोत्कृष्ट कलकत्ता की झुग्गी थी।

सड़कों पर कीचड़ था और हमने गड्ढों से बचने की कोशिश के दौरान कीचड़ को छींटा दिया।

मानसून के दौरान कलकत्ता में जलभराव हो जाता है। जैसे–जैसे हम चलते रहे, बारिश होती रही और बहते नाले का पानी हमारी ऊर्जा पर भारी पड़ा। जबकि कचरे के ढेर ने हमारा स्वागत किया, हमने अपने मित्र के घर के करीब एक ढेर में खाना सड़ता सड़ता हुआ मिला।

मैं अलग–अलग परिस्थितियों में रहने के लिए अभ्यस्त था। ओडिशा के एक सुदूर गाँव के सबसे गरीब घरों में से एक में निवास करते हुए, मैं ऐसी परिस्थितियों में रह चुका था।

उनके मित्र के घर पर स्नान करने के लिए कोई उचित शौचालय या जगह नहीं थी।

"डेढ़ घंटे तक चलने के बाद, क्या हमें यहाँ स्नान करना चाहिए, साहू बाबू? मुझे यहां कोई वॉशरूम नहीं दिखता, "मैंने उनसे पूछा।

''मुझे क्षमा करें। यह मेरी पहली यात्रा है। मुझे नहीं पता था कि यह इस तरह से होगा'', साहू बाबू हड़बड़ा गए। ''सर, चलो हुगली नदी में स्नान करते हैं'', साहू बाबू ने कहा।

इसलिए, हम नदी के किनारे चले गए। यह एक और डेढ़ घंटे तक चलना था। बदबू हावी थी। पूरा वातावरण ताजा शौच की बदबू से प्रदूषित था।

जब भी मैं यात्रा करता था, मेरा सामान्य अभ्यास रेलवे स्टेशनों पर वेटिंग रूम टॉयलेट का उपयोग करना था। यह कहना उचित होगा कि वे किसी और से बेहतर थे।

दो बार सोचने के बिना, मैंने अपने कपड़े उतार दिए, अपना 'गमछा' (एक पतला सूती खुरदुरा तौलिया) पहना।

मैंने जबरदस्ती अपनी आँखें, कान और नाक बंद कर लिए, एक डुबकी लगाई और कपड़े बदल लिए। मैं पूरी तरह से खराब परिस्थितियों में रहा हूँ और इससे मुझे हर परिवेश के दर्द को पचाने और योजना के अनुसार आगे बढ़ने में मदद मिली।

इसके बाद हम बाउबाजार में के.आई.आई.टी.–आई.टी.आई. के उपकरण खरीदने गए। जब हमने अपना काम खत्म किया, तो शाम हो चुकी थी।

अब तक हम केवल एक कुली का खर्च उठा सकते थे, हम दोनों ने बस में चढ़ने तक उपकरण अपने सिर और कंधों पर ढोए। वापस आते समय, मैंने साहू बाबू से पूछाः "आपने होटल में कमरा क्यों नहीं बुक किया? इसकी कीमत लगभग 500 रुपये होगी।"

साहू बाबू ने आश्वस्त स्वर में उत्तर दिया, "सर, हम अपने संस्थान के लिए उपकरण खरीदने के लिए धन पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यहाँ तक कि 500 रुपये भी हमारे लिए बहुत बड़ा है। हम ऋण ले रहे हैं और इसका उपयोग के.आई.आई.टी.–आई.टी.आई. के लिए कर रहे हैं। हम इसे केवल एक स्वच्छ शौचालय पाने के लिए अपने आराम के लिए खर्च करने के बारे में कैसे सोच सकते हैं?"

मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं था। मैं इनकार की स्थिति में था।

वर्ष 2018 के लिए हम तेजी से आगे बढ़ें। छब्बीस साल बाद, मैं उसी ट्रेन में था और मुझे कभी नहीं मिलने वाली सुख–सुविधाओं के साथ दिव्य आशीर्वाद मिला। इस बार मैं एक ए.सी. प्रथम श्रेणी के डिब्बे में था।

मैंने कलकत्ता के लिए उड़ान भरी होगी, लेकिन भुवनेश्वर में मेरी व्यस्तताओं ने मुझे कलकत्ता के लिए अंतिम संभव ट्रेन लेने के लिए मजबूर कर दिया।

स्टेशन मास्टर मुझे देखने आया था। मेरे कर्मचारी और सहकर्मी मुझे देखने आए और ट्रेन में उपस्थित लोगों ने बेजोड़ आतिथ्य को बढ़ाया।

मैं शौचालय गया, सफाई की, और मुझे अपना बिस्तर नहीं करना पड़ा क्योंकि परिचारक ने सारी व्यवस्था की थी। हालाँकि, मुझे नींद नहीं आ रही थी, क्योंकि मुझे कलकत्ता और अपनी असहाय अवस्था के लिए उसी ट्रेन में रात की याद दिलाई गई थी।

उस सर्वशक्तिमान के लिए मेरा हृदय कृतज्ञता के साथ भर गया था, जिसने मुझे स्वयं एवं लाखों लोगों के लिए परिश्रम से इतना कठिन लक्ष्य हासिल करने की प्रेरणा एवं साहस दिया।

मुझे सांत्वनाभरी जिन्दगी देने के लिए सभी देवी–देवताओं को मैंने धन्यवाद दिया।

राज्यसभा सांसद के रूप में मुझे इस महत्वपूर्ण भूमिका को सौंपने के लिए, मैंने हमारे मुख्यमंत्री को भी धन्यवाद दिया। मैं जीवन को समेटने की कोशिश कर रहा था –

"यदि आपके इरादे नेक हैं और काम अच्छे हैं, तो विशेषाधिकार, स्थिति और मान्यता अपने आप आ जाती है। समूचा ब्रह्मांड मानवता की बड़ी भलाई के लिए एक ऐसे व्यक्ति को वापस देने की साजिश करता है।''

पुनश्चः ये उनके अब तक के मिलियन संघर्षों और कठिनाइयों के कुछ प्रकरण हैं।

प्रशंसापत्र

''के.आई.एस.एस. अद्भुत है। यह विश्व में अनूठा एवं दुर्लभ है।''

प्रो. मुहम्मद यूनुस

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, 2006

''के.आई.एस.एस. एक वास्तविक 'प्रकाशस्तंभ प्रकल्प' है। यह अपने संस्थापक द्वारा 'आर्ट ऑफ गिविंग' के आदर्श वाक्य की अभिव्यक्ति है।''

प्रो. जे. जॉर्ज बेडनॉर्ज

भौतिकी के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, ज्यूरिख, 1987

''मेरे देश, इसराइल में 25000 छात्र हैं, लेकिन यहाँ के.आई.एस.एस. में मैंने इतनी ही संख्या देखी है। के.आई.एस.एस. वास्तव में प्रभावशाली है।''

प्रो. आद्या इतिल योनाथ

रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, इजराइल, 2009

''शिक्षा क्या है? शिक्षा बहुत उत्कृष्ट व बहुमूल्य है। डॉ. सामंत ने जो कुछ किया है, वह दो पाउंड से अधिक सोने का है।''

प्रो. फरीद मुराद

फिजियोलॉजी या चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, 1998

''मैं इतने कम समय में इस युवा विश्वविद्यालय द्वारा की गई प्रगति से बहुत प्रभावित हूं।''

प्रो. सर जॉन ई. वॉकर

रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, 1997

''के.आई.एस.एस. एक असाधारण आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने की कोशिश का पहल है।''

प्रो. रॉल्फ जिन्करनागेल

चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, 1996

''आपकी उपलब्धि आने वाली पीढ़ियों के लिए अनुकरण करने के लिए सिर्फ अविश्वसनीय और बेहद कठिन है।''

प्रो. हिरोशी अमानो

वर्ष 2014 में भौतिकी के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता

''यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि के.आई.एस.एस. भावी पीढ़ियों के लाभार्थ कार्य कर रहा है। यह हजारों छात्रों को एक सही रास्ते पर ला रहा है।"

प्रो. इरविन नेहर

फिजियोलॉजी या चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, 1991

"आपको पता है कि मैं एक छोटे से गाँव से आता हूँ। आप मेरे गाँव के आकार से 10 गुना हैं।''

प्रो. ओलिवियर स्मिथिज

फिजियोलॉजी या चिकित्सा के क्षत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता, 2007

''डा. सामंत मेरे लिए एक जीवन के आदर्श (मॉडल) हैं।''

प्रो. रिचर्ड आर अर्नस्ट

रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कारे विजेता, 1991

''प्रो. अच्युत सामंत ने अपनी दृष्टि, समर्पण और जुनून के माध्यम से जो कुछ भी बनाया है, उसके लिए मैं प्रशंसा से अभिभूत हूँ।''

सर रिचर्ड जॉन रॉबर्टस

1993 में फिजियोलॉजी या चिकित्सा के क्षेत्र मै नोबेल पुरस्कार विजेता

''यहाँ पर के.आई.एस.एस. में बच्चों के मुस्कुराते हुए चेहरे को देखना एक खुशी की बात है। के.आई.एस.एस.का परिभ्रमण एक तीर्थयात्रा करने की तरह है। मन्दिर, मस्जिद और चर्च सभी इन मासूम बच्चों की मुस्कान में समाहित हैं।''

श्री कैलाश सत्यार्थी

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, 2014

''मैं के.आई.एस.एस. और के.आई.आई.टी. की सुविधाओं को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं के.आई.एस.एस. के विकसित होने और विश्व के लिए एक अच्छा उदाहरण बनने में सक्षम होने की कामना करता हूँ।''

प्रो. अर्नेस्टो कहन

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, 1985